चैतन्य लहरी

मई - जून, 2004

इस अंक में

3 ईसामसीह पूजा – 25.12.03 गणपति पुले

5 संक्रान्ति पूजा – 14.01.04 पुणे

6 सतोगुण की प्राप्ति – 17.05.80

14 अहं पर विजय पाकर आप स्वयं को कैसे पहचानें–डालिस हिल – 18.11.79

20 आनन्द

24 हमारी प्राथमिकताएं क्या हैं

26 त्रिगुण – 3.2.78 दिल्ली

प्रकाशक
निर्मल इन्फोसिस एवं टेकनोलोजीज़ प्रा. लि.
मुख्य कार्यालय : प्लाट न. 8, चन्द्रगुप्त हाऊसिंग सोसाइटी,
होटल ग्रेस के पीछे, पॉड रोड, कोठरुड
पुणे - 411 029

मुद्रक
अमरनाथ प्रेस प्रा. लि.
WHS-2/47, कीर्ति नगर, औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110015

सदस्यता के लिए कृपया निम्न पते पर लिखें :-
श्री जी.एल. अग्रवाल
निर्मल इन्फोसिस एवं टेकनोलोज़ीज़ प्रा. लि.
222, देशबन्धु अपार्टमैंट, कालका जी
नई दिल्ली-110 019

आप अपने अनुभव, सुझाव, सहज सम्बन्धी लेख आदि निम्नलिखित पते पर भेजें :

श्री ओ. पी. चान्दना
जी-11-(463), ऋषि नगर, रानी बाग
दिल्ली - 110 034
दूरभाष : 011-55356811
प्रात: 08.00 बजे से 09.30 बजे
सायं: 08.30 बजे से 10.30 बजे

ईसामसीह पूजा

गणपति पुले – 25.10.03
(हिन्दी रूपान्तर)

आज महान दिवस है, हम ईसामसीह का जन्मदिवस समारोह मना रहे हैं। उनका व्यक्तित्व इतना आध्यात्मिक था कि उन्हें सूली पर चढ़ना पड़ा। बहुत से लोगों की समझ में ये बात नहीं आती कि उन जैसी योग्यता, स्थिति तथा आध्यात्मिकता वाले व्यक्ति को जीवन में इतने कष्ट क्यों झेलने पड़े। ये बात समझ लेना बहुत आसान है कि उनका जन्म ऐसी परिस्थितियों में हुआ जो उनकी स्थिति तथा परमेश्वरी शक्ति के प्रतिकूल थीं। ईसामसीह को वश में करने के लिए लोगों ने उन्हें खत्म करने का प्रयत्न किया। परन्तु न तो वे दर्द से तड़पे और न ही लोगों की मूर्खता का बुरा माना। इसके विपरीत, उन्होंने सारे कष्ट झेले। यह उनकी दिव्यता थी क्योंकि दिव्य शक्ति साहस प्रदान करती है और साहस से व्यक्ति अग्नि परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकता है। पृथ्वी पर अवतरित व्यक्ति के सम्मुख भिन्न प्रकार की समस्याएं होती हैं, चाहे आप राजवंशी हों या निर्धन व्यक्ति। समस्याएं सदैव बनी रहती हैं। ईसामसीह ने दर्शाया कि इतने कष्ट झेलते हुए भी वे अत्यन्त शान्त थे। उनका जीवन हमारे सम्मुख एक मिसाल है कि लोगों द्वारा खड़ी की गई समस्याओं का सामना करते हुए हमें कैसा होना चाहिए और किस प्रकार आचरण करना चाहिए।

आज उनका जन्म दिवस है, यह खुशी का दिन है। हम समारोह मना रहे हैं क्योंकि उन्होंने आध्यात्मिकता का नया मार्ग हमें दिखाया है जिसमें कष्ट झेलने ही पड़ते हैं। बहुत से लोगों की अज्ञानता के कारण उन्होंने इतना दुःख उठाया। परन्तु आज स्थिति इतनी बुरी नहीं है। लोग आध्यात्मिकता और दिव्यता को समझते हैं तथा आज आपकी संख्या भी काफी बड़ी है। कष्टों को झेलते हुए भी ईसा कभी न तो रोए और न चिल्लाए। अत्यन्त दृढ़ता पूर्वक उन्होंने सब कुछ सहन किया। अतः उनके जीवन से हमें सीखना है कि किसी भी परिस्थिति में हमें घबराना नहीं। अब समय बदल गया है। आपकी आध्यात्मिकता के कारण लोग अब आपको सताते नहीं। ऐसा नहीं है। यह सब

समाप्त हो गया है। ईसा मसीह ने मानव मस्तिष्क से ये सब भाव समाप्त कर दिए हैं। आध्यात्मिक होने के कारण लोग अब आपका सम्मान करते हैं। ईसा मसीह के जीवन का यही संदेश है। हमें खुशी होनी चाहिए कि उन्होंने हमें सहनशीलता का मार्ग दिखाया।

सहजयोग का भी यही संदेश है कि आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करें, आध्यात्मिक जीवन अपनाएं। बाकी सब कुछ स्वतः ठीक हो जाएगा क्योंकि सभी दिव्य शक्तियाँ आपके साथ हैं। वो आपके लिए सभी कार्य कर रही हैं। आपमें से अधिकतर लोग इस बात के साक्षी हैं। जीवन में उन्होंने जो कष्ट सहे वो आपको नहीं सहने पड़ेंगे। हमारे लिए उन्होंने सभी कष्ट सह लिए। हमें प्रसन्न, शांत एवं आनन्दित होना है। मुझे ये सब कहने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि आप लोगों ने इसका अनुभव किया है। आज भी अत्यन्त क्रूर, मूर्ख एवं आक्रामक लोग हैं, परन्तु कोई आपको हानि नहीं पहुँचा सकता। जीवन अत्यन्त बदल गया है और जिस लक्ष्य के लिए ईसामसीह ने इतनी यातनाएं झेलीं उसे प्राप्त करने में आपको काफी मदद मिली है।

हिन्दी प्रवचन

ईसामसीह की आज जन्म तारीख है और हम लोग बहुत उसको खुशी से मना रहे हैं किन्तु जीज़स क्राईस्ट को कितनी तकलीफें हुईं वो भी हम लोग जानते हैं और वो तकलीफें, जो परेशानियाँ उनको हुईं वे हम लोगों को नहीं हो सकतीं क्योंकि अब समाज बदल गया है, दुनियाँ बदल गई है और इस बदली हुई दुनिया में आध्यात्मिक जीवन बहुत महत्वपूर्ण है। इससे कितने क्लेश हमारे दूर हो सकते है! हमारे शारीरिक क्लेश आध्यात्म से खत्म हो सकते हैं, मानसिक क्लेश आध्यात्म से खत्म हो सकते हैं, इसके अलावा जागृति के मार्ग में जो भी क्लेश हैं वो भी खत्म हो सकते हैं। इस तरह सारी दुनिया की ज़िन्दगी जो है आध्यात्म में पनप सकती है। कितना महत्वपूर्ण है यह जानना कि एक तरफ तो ईसामसीह जैसा आध्यात्म का मसीहा और दूसरी तरफ हम लोग जिन्होंने आध्यात्म को थोड़ा बहुत पाया है और हम लोगों की वजह से दुनिया शान्त हो गई, बहुत सी तकलीफें दूर हो गई और मनुष्य जान गया कि उसके लिए सबसे बड़ी चीज़ है आध्यात्म को पाना। ये आप लोगों की ज़िन्दगी से उसने जाना है, आप को देखकर उसने जाना है। ये सारा परिवर्तन आप लोगों की वजह से आया, हम अकेले क्या कर सकते थे! जैसे ईसामसीह वैसे ही हम, हम कितना कर सकते थे! लेकिन इतने लोग आप जब आपने आध्यात्म को प्राप्त किया है तब देख सकते हैं कि दुनिया कितनी बदल गई है! आपके प्रभाव से और आपके अन्तर्यामी जो शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक जितनी भी तकलीफें हैं वो दूर हो गई हैं। इसका प्रत्यन्तर बहुत लोगों को आया है, दुनिया भर में लोग जान गए हैं कि सहजयोग से बहुत जबरदस्त परिवर्तन आ जाता है। सिर्फ एक व्यक्तिगत नहीं किन्तु जागृति से हज़ारों लोगों में परिवर्तन आ सकता है, समाज में परिवर्तन आ सकता है और ये सब आप कर रहे हैं जो बड़ी महत्वपूर्ण बात है।

संक्रान्ति पूजा

पुणे – 14.01.2004

(परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन)

जब ये सूर्य दक्षिण से उत्तर में आता है, इसलिए नहीं कि ये घूमता है, हर साल एक ही तारीख को ऐसा होता है। तो हम लोग इसको क्यों इतना मानते हैं? क्या विशेष बात है कि सूर्य अगर उत्तर में आ गया तो हम लोगों को उसमें इतनी खुशी क्यों होती है? बात ये है कि सूर्य से ही हमारे सब कार्य जो हैं प्रणीत होते हैं। अंधेरे में, रात्रि में हम लोग निद्रावस्था में रहते हैं लेकिन जब सूर्य उदित होता है उसके बाद ही हमारे सारे कार्य चलते हैं। इसलिए इस कार्य को प्रभावित करने वाली जो चीज है, वो है सूर्य और वो क्योंकि हमारे कक्ष में आ जाती है तो हम इसको बहुत मानने लगते हैं। सबसे बड़ी बात तो ये है कि बाकि सारे त्योहार चन्द्रमा को ध्यान में रख कर होते हैं और सिर्फ यही एक त्योहार ऐसा है कि जो हम सूर्य के आधार पे लेते हैं। ऐसे हमारे यहाँ सूर्यनारायण की भी बहुत महति (महत्व) है और लोग सूर्यनारायण को मानते हुए गंगाजी पर जा कर नहाते हैं और अनेक तरह के अनुष्ठान करते हैं। पर सबसे महत्वपूर्ण यही एक दिन है। अब हम लोगों को यह तय करना पड़ता है कि इस दिन क्या करना चाहिए? इस विशेष दिन को क्या कार्य करना चाहिए? सूर्य का नमस्कार हो गया, सूर्य को अर्घ्य दे दिया और सूर्य के प्रति अपनी कृतज्ञता हम लोगों ने सम्बोधित की। किन्तु क्या विशेष अब कर सकते हैं? विशेष कर सहजयोगी, क्या कर सकते हैं? आज्ञा चक्र पे सूर्य का स्थान है, आप लोग जानते हैं और आज्ञा चक्र से आप आगे की सोच सोचते हैं। तो आज्ञा चक्र को ठीक करना बहुत जरूरी है क्योंकि ये सूर्य को प्रभावित करता है। इसके लिए आज्ञा पर जो महत्व है वो ये है कि आज्ञा पर हमारे जो ग्रह हैं उनके अनुसार हम लोग आज्ञा चक्र से लोगों पर क्रोधित होते हैं और उनके साथ हमारा व्यवहार बिगड जाता है, गुस्सा आता है और हर तरह की आस्थाएं टूटती जाती हैं। आज्ञा बहुत महत्वपूर्ण क्षेत्र है जिसको हमें समझना चाहिए कि इस पर ईसामसीह का स्थान है और ईसामसीह ने एक ही चीज़ बताई थी–'सबको क्षमा करना चाहिए।' क्षमा करना बहुत ज़रूरी चीज़ है। अब वो कैसे किया जाए? लोग बहुत से कहते हैं कि हमने तो कर दिया पर होता नहीं है। क्षमा के लिए ज़रूरी है कि सबको क्षमनस्य होना चाहिए और सोचना चाहिए कि जिसे जो करना था वो भोगेगा, हमको क्या करना है! जिसने जो कहा था वो खुद उसको इस्तेमाल होगा हमको इसमें क्यों पड़ना है? इस तरह से निरीक्षता आ जाए और आप क्षमा कर दें सबको तो आज्ञा चक्र ठीक हो जाएगा। आज्ञा चक्र ठीक होने से जो बहुत बड़ी रुकावट हमारे उत्थान में है, जो कुण्डलिनी को रोकती है वो है आज्ञा और इसके लिए हमें क्षमा करना आना चाहिए। हर समय हम सोचते रहते हैं किसने क्या दुःख दिया, किसने क्या तकलीफ दी। उसकी जगह ये सोचना चाहिए कि हमें क्षमा करना है, उसको हमने क्षमा कर दिया और क्षमा करने से एकदम से, आपको हैरानी होगी, कि कुण्डलिनी झट से ऊपर चढ़ जाएगी। हमको तो अपनी कुण्डलिनी को चढ़ाना है और उसके लिए हमें ज़रूरी क्या है कि गुस्सा हम करें? गुस्सा करना मनुष्य का स्वभाव है, परमात्मा का नहीं, मनुष्य का स्वभाव है। इसलिए हमें गुस्से को रोकना चाहिए और उसकी जगह 'क्षमा, क्षमा, क्षमा' ऐसे तीन बार कहने से आज्ञा चक्र ठीक हो जाता है।

सबको अनन्त आशीर्वाद

सतोगुण की प्राप्ति

17.05.1980 (अनुवादित)

(परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन)

बनने के विषय में जब आप सोचते हैं तो कुछ बनने की तैयारी हो जाती है और जब आप यह समझ जाते हैं कि अहँ और प्रतिअहँ आप पर सवार हैं तो चैतन्य–चेतना द्वारा इनका सूक्ष्म निरीक्षण करें।

चित्त (attention) दो प्रकार का होता है। पहला जो निरन्तर कार्यरत है–सहजयोगियों में यह दिन–चर्या की चीज है। दूसरा आपातकालीन चित्त (emergency attention) है। मैं सोचती हूँ कि सभी सहजयोगियों को रोजमर्रा के अनुभवों की डायरी अवश्य लिखनी चाहिए। आपको यदि ये पता होगा कि आपने डायरी लिखनी है तो अपने मस्तिष्क को एकदम चुस्त रखेंगे। भूत या भविष्य के विषय में जब भी कोई विशेष विचार प्राप्त हों तो उन्हें लिख लें। इस प्रकार आपके पास दो डायरियां होनी चाहिएं। निरन्तर देखने के लिए आपको अपना मस्तिष्क कुछ तथ्यों पर लगाना पड़ेगा। पहली बात, जैसे मैंने कहा, यह है कि यदि आप डायरी रखेंगे तो जान जाएंगे कि घटित हुई सभी महत्वपूर्ण चीज़ों को आपने याद रखना है। इस प्रकार आपका चित्त चुस्त हो जाएगा और सभी चीज़ों के प्रति आप सावधान रहेंगे। चित्त के चुस्त कर लेने पर, आप हैरान होगें, कितनी नई चीज़ें आपको सूझती हैं–अत्यन्त प्रतिभाशाली विचार, जीवन के चमत्कार, परमात्मा के सौंदर्य और मंगलमयता के विचार, उनकी महानता, करुणा और आशीर्वाद। दो पंक्तियाँ भी यदि प्रतिदिन लिखेंगे तो किस प्रकार कार्यान्वित करेंगे? ऐसा करने मात्र से आपका मस्तिष्क निरन्तर अन्तःस्थित होता चला जाएगा। मानव की यही कार्यशैली है।

डायरी में आप ये भी लिख सकते हैं कि आप के साथ क्या घटित हुआ। क्या आप ध्यान कर सके? ध्यान करने के लिए आपको समय मिला या नहीं? इस कार्य को कुछ इस प्रकार से करें जैसे आप किसी परीक्षा की तैयारी कर रहे हों, वैसे ही लिखलें। क्या मैं प्रातःकाल उठा? क्या मैं उठ पाया? अपने मध्य, बायें या दायें ओर की किसी भी विशेष गतिविधि के अनुभव को अवश्य लिखें ताकि अपने मस्तिष्क पर दृष्टि रख सकें। डायरी लिखना बहुत अच्छी बात है।

आप देखेंगे कि किस प्रकार आपके विचार बदले हैं। किस प्रकार नई प्राथमिकताएं स्थापित हो रही हैं! वास्तविक चीज़ों को किस प्रकार आप महत्व देते हैं और अवास्तविक को कतई महत्व नहीं देते। डायरी लिखना, मेरे विचार से मनुष्य के लिए अत्यन्त व्यवहारिक कार्य है। कुछ समय पश्चात कुछ डायरियाँ ऐतिहासिक महत्व की वस्तुएं बन जाएंगी। लोग जानना चाहेंगे कि आप सबने क्या लिखा हैं। पाखण्ड या धोखा करने के लिए नहीं, अत्यन्त सच्चाई और सूझबूझ के साथ सोने से पूर्व कुछ पंक्तियाँ लिखें।

हमें देखना है कि हमारे साथ अहँ और प्रति अहँ कि समस्याएं हैं। प्रतिअहँ बाईं ओर से है–अन्धकार, तमोगुण और हमारा भूत काल है। बाईं ओर की बाधाओं से ग्रस्त लोगों को सन्तुलन में आने के लिए भविष्य के बारे में सोचना चाहिए। आलसी व्यक्ति को चाहिए कि काम करने की आदत डाले। अपने मस्तिष्क को भविष्य की योजनाएं बनाने में लगादें। क्या करूं, कहाँ जाऊं, किस प्रकार कार्य करूं? इस प्रकार बाईं ओर के खिचाव से बच कर शनैः शनैः आप स्वयं को संतुलित कर पाएंगे।

किसी व्यक्ति की दाईं ओर यदि बहुत अधिक गतिशील हो उठे तो तामसिकता द्वारा सन्तुलन नहीं करना चाहिए। मध्य का इस्तेमाल करना चाहिए। कोई यदि बहुत अधिक मेहनती है तो उसे चाहिए कि साक्षीभाव विकसित करे। कोई कार्य करें, निर्विचार चेतना में रहते हुए साक्षी–भाव से इस कार्य को करें। चाहे जो भी आप कर रहे हों, कहें कि मैं कुछ नहीं कर रहा। आत्मसाक्षात्कार के पश्चात आप ऐसा कर सकते हैं–निर्विचार चेतना में स्थापित हो कर अपना कार्य आरम्भ कर सकते हैं।

अतः बाईं ओर की समस्याओं का समाधान दाईं ओर को गतिशील करके होता है और दाईं ओर की समस्याओं का समाधान मध्य में स्थापित होने से। बाईं ओर तमोगुण है, दाईं ओर 'रजोगुण' और मध्य में 'सत्वगुण'। परन्तु ये तीनों गुणों का अस्तित्व है। यह स्थिति आपने प्राप्त नहीं करनी। कल मैं आपसे बताऊंगी कि इसमें आगे किस प्रकार बढ़ना है। पता लगाने के बाद, कि आपका कौन सा पक्ष कमज़ोर है, अपनी जीवनशैली की योजना बनाएं।

उदाहरण के रूप में यदि आप अत्यन्त आलसी स्वाभाव हैं, सुबह सवेरे उठ नहीं पाते, रात को आपको बहुत नींद सताती है, आपमें चुस्ती का अभाव है, तो सोचें कि आपको क्या करना है? किस प्रकार आप प्रातः उठ पाएंगे? पूजा का विचार भी अच्छा है, घर का भी। कुछ ऐसा कार्य करें जिसे आप क्रिया कहते हैं। क्रिया–शील बनें। सहजयोग में तथा रोजमर्रा के जीवन में क्रियाशीलता लाएं। इस प्रकार आपका स्वभाव पहले रजोगुणी बनेगा और फिर आप सतोगुण की ओर बढ़ेंगे, अर्थात हर चीज़ को साक्षी–भाव से देखेंगे। सत्वगुण तक पहुँच कर, जहाँ आप मध्य में होते हैं–आपको देखना होगा कि किस सीमा तक आपका गलत आंकलन हुआ है? मान लो बाईं ओर की पहली अवस्था में हैं तो आप जागते हुए स्वप्न देखेंगे। ओह! फलां व्यक्ति की इतनी मान्यता है, फलां की इतनी मान्यता है। मानो आप सर्वोत्तम हों। आप जानते हैं कि ये मानव स्वभाव है। वह व्यक्ति ऐसा है, वह ऐसा है। समाज में यह बहुत बड़ी खराबी है, यह बहुत बुरा हो रहा है। हम उस सीमा तक भी जा सकते है कि 'वह गुरु बहुत बुरा है, वह विक्षिप्त है। इस प्रकार बहुत कुछ चल रहा है। यह आपको कितना प्रभावित कर रहा है? इससे आपका कितना सुधार हुआ? बस सोचना और विश्लेषण ही चल रहा है। यह तामसी शैली है, बैठे बैठे विश्लेषण करते रहना तामसी शैली है।

दूसरी चीज़ तब होती है जब आप दूसरी ओर क्रिया पर आते हैं। उस स्थिति में आपका चित्त उस कार्य पर होता है जो आप कर रहे होते हैं। इसे कहीं ओर जाने की आज्ञा नहीं होती, अन्यथा ये चित्त किसी भी व्यर्थ की बात की ओर जाता है और आपकी समझ में ये नहीं आता कि ये सभी उल्टे–सीधे विचार कहाँ से आ रहे हैं। अतः कुछ करना आरंभ करें। आप चाहें तो पेड़–पौधे लगा सकते हैं। अतः कुछ करना आरंभ करें। आप चाहें तो पेड़–पौधे लगा सकते हैं, चाहें तो खाना बना सकते हैं या कोई और कार्य कर सकते हैं। काम करना आरंभ करें। इससे आपको सहायता मिलेगी। परंतु कार्य करने से आपका अहं बढ़ सकता है। अहंभाव जब भी बढ़ने लगे तो स्वयं से कहें कि श्रीमन् आप ये कार्य नहीं कर रहे हैं, ये कार्य आप नहीं कर रहे हैं। ये बात यदि आप स्वयं को सुझाते रहेंगे तो आपमें अहं नहीं बढ़ेगा और जो बातें आपको तथा अन्य लोगों को कष्ट देती हैं– जैसे मानलो आपने कमरा साफ किया है, कोई आकर इसे गंदा कर देता है तो स्वाभाविक रूप से आपको क्रोध आएगा क्योंकि आप सोचते हैं कि "मैंने कमरा साफ किया

था।" या तो आप कमरा साफ न करें और करें तो इस बात के लिए तैयार रहें कि इसे गंदा तो होना ही है अन्यथा साफ करने की आवश्यकता क्यों पड़ती। कमरा साफ है तो भी ठीक है और साफ नहीं है तो भी ठीक है। सत्वगुण की अवस्था में पहुँचने के लिए इस प्रकार का दृष्टिकोण अपनाएं, सत्त्वगुण पर पहुँच कर आप स्वीकार करने लगते हैं। अत्यंत विनम्र हो जाते हैं। आपका व्यक्तित्व अत्यंत कोमल हो जाता है। तब आप ये नहीं सोचते कि "ओह! मुझे ये पसंद नहीं है। ये गलत था, ऐसा नहीं होना चाहिए था।" सत्त्व गुण की अवस्था में आपमें ये सब चीजें नहीं आतीं। आप इन्हें देखने लगते हैं। उसी समय आप देख लेते हैं, "ठीक है, कोई बात नहीं।" आप समझ जाते हैं। इसके विपरीत सतोगुणी होते हुए भी यदि आपमें अहंभाव आता है तो आपको कष्ट होता है। क्या आप इस बात को समझ पाए? आप यदि सतोगुणी हैं तो आपको अपने अहं पर शर्म आती है। उदाहरण के रूप में आपको ये कहते हुए भी संकोच होगा कि 'ये मेरी कार है।' या ये कहते हुए कि 'आपने मेरा कालीन गंदा कर दिया।' भारत में कोई भी ऐसा नहीं कहेगा। मैं आपको बताती हूँ कि ऐसा कहना अभद्र व्यवहार माना जाता है, पूर्णतः अभद्र व्यवहार। कोई यदि आपके घर पर आए और उससे कालीन गंदा हो जाए तो लोग कहेंगे 'कोई बात नहीं, होने दो' कालीन यदि जल भी जाए तब भी लोग कहेंगे कि 'आपको आँच तो नहीं आई?' वो कभी नहीं कहेंगे कि आपने मेरा कालीन जला दिया या कुछ और बिगाड़ दिया। ऐसा कहना अभद्रता मानी जाती है। जैसे यदि कोई सोया हुआ हो और कोई शोर मचा दे तो जागने पर वह व्यक्ति कहेगा कि मुझे तो उठना ही था। उठकर वह पूछेगा, 'आपको किसी चीज़ की आवश्यकता है?' यहाँ के (Europe) लोगों को ये बात समझानी बहुत कठिन है क्योंकि इनके सिर पर तो अहं सवार है। परंतु भारत में इसे अभद्रता माना जाता है। ये बात आपको भारत जाने पर ही पता लगेगी। आप महसूस करेंगे कि ऐसा कहना अभद्रता है। किस प्रकार कह सकते हैं कि, 'मैं अत्यंत सुख से हूँ।' ऐसा कहना अभद्रता है। वहां के लोग ऐसा कभी नहीं कहते। 'मुझे पसन्द है', तो क्या? ये शब्द उपयोग नहीं किए जाने चाहिएं। यदि आप सतोगुणीं हैं तो आप ऐसा कुछ नहीं कहते। आप पूछते हैं, 'क्या आपको पसन्द है? क्या यह सुखकर है? क्या आप इसे लेना पसन्द करेगें?' आप ही की ओर से पूरा चित्त जाता है। क्या आप इस बात को समझ पाए? व्यक्ति को यही शैली विकसित करनी चाहिए। केवल तभी आप सतोगुणीं हैं अन्यथा आप अभी भी अहम् के झूले पर सवार हैं। किसी भी चीज को देखकर आप कहते हैं कि यह मुझे पसन्द नहीं है। 'मैं', आप कौन हैं? सर्वप्रथम प्रश्न पूछें कि आप कौन हैं। परमात्मा यदि ये कहें कि 'मुझे पसन्द नहीं है' तो मेरी समझ में आता है। परन्तु आपका यह कहना मेरी समझ में नहीं आता। आखिरकार आप पृथ्वी पर किस प्रकार अवतरित हुए? किस प्रकार आपको मानव जन्म प्राप्त हुआ? किस प्रकार आपको ये सभी वस्तुएं प्राप्त हुईं? अब आप इस प्रकार सोचें, 'मैं कौन हूँ? मैं तो कुछ भी नहीं'।

कोई यदि अपने को कुछ समझता है तो उसे जान लेना चाहिए कि वह कुछ भी नहीं। उसके होने या न होने का परमात्मा को कोई फर्क नहीं पड़ता। आपको यदि ये बात समझ में आ जाए तब किसी भी कार्य को करते हुए आप सोचते है कि मैं इसे इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि मैं करना चाहता हूँ और इस प्रकार आप सतोगुण पर पहुँच जाते हैं। परन्तु प्रायः ऐसा होता नहीं है। होता इसके विपरीत है। उदाहरण के रूप

में कोई व्यक्ति कुछ कार्य कर रहा है, अचानक उसका दिल दुखता है या वो सोचता है कि जो भी उसने किया वह अच्छा नहीं है, लोग इसकी सराहना नहीं करेंगे, यह अच्छे स्तर का नहीं है। इसकी प्रक्रिया उस व्यक्ति पर केवल यही नहीं होती, वह सतोगुण की स्थिति प्राप्त करने के प्रयत्न को छोड़ देता है परन्तु उसका तमोगुण में पतन हो जाता है। वह कहता है ठीक है, अब मैं इसे करूंगा ही नहीं, आराम से सोऊंगा। बाकी लोगों को कर लेने दो। मुझे ही क्यों करना है? तो रजोगुण से जो शिक्षण आपको प्राप्त होता है वह व्यर्थ चला जाता है। रजोगुण की स्थिति में होना आपके प्रशिक्षण का समय है। आप कोई कार्य कर रहे हैं। प्रशिक्षण के समय में आपने केवल एक बात सीखनी है कि मध्य में किस प्रकार आना है। शेव करने के लिए आपको पानी की आवश्यकता पड़ती है। पानी के बिना आप शेव नहीं कर सकते। इसी प्रकार सतोगुण तक पहुंचने के लिए रजोगुण की आवश्यकता है। आप यदि कोई कार्य नहीं करते तो सतोगुण तक नहीं पहुंच सकते। अतः आप जो भी कार्य कर रहे हैं स्वयं साक्षी भाव तक पहुंचने का प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए कर रहे हैं। अब आपको यह बात समझ में आई? इसलिए आप कार्य नहीं कर रहे क्योंकि आपको यह पसन्द है या किसी चीज विशेष की आदत है, इसलिए कर रहे हैं क्योंकि आप गहनता में जाना चाहते हैं। इसलिए आप कार्य कर रहे हैं कि आप सीख सकें कि शान्त कैसे होना है, शान्ति पूर्ण व्यवहार किस प्रकार करना है, तथा यह देखने के लिए कि आप कितने शान्त हैं। एक बार जब आप ऐसा करने लगेंगे तो, आप हैरान होगें कि, किसी भी स्थिति में वह कार्य आपको बोझ नहीं लगेगा। परन्तु ऐसा होता नहीं है, लोगों को यदि यह लगता है कि उनके द्वारा किया गया कार्य प्रभावशाली नहीं है तो वे तमोगुण में चले जाते हैं। बहुत से दृष्टिकोण हैं। कार्य करते हुए व्यक्ति सोचता है कि मैं ही क्यों इस कार्य को कर रहा हूँ और तो कोई नहीं करता? और वह भी उन्हीं लोगों की स्थिति में चला जाता है। कार्य न करने वाले लोग भी यह नहीं सोचते कि यह व्यक्ति सारा कार्य कर रहा है, मुझे भी कुछ करना चाहिए। इसी चीज का यह दूसरा पक्ष है। कुछ लोगों का यह दृष्टिकोण है कि यह व्यक्ति कार्य कर रहा है तो करने दो। यह शैली तो और भी अधम है। इन चीज़ों से बचना चाहिए। आप किसी रेस्त्रां में जाते हैं, बिल देने के लिए एक व्यक्ति अपना पर्स निकालता है और दूसरा अपनी नजरें दूसरी ओर घुमा लेता है। ऐसा करना नीचता है।

सभी को आगे आना चाहिए और एक बार जब आपने भुगतान कर दिया तो कर दिया, समाप्त। यह सोचना न शुरु कर दें कि क्यों मैने भुगतान किया। व्यक्ति को प्रयत्न करना चाहिए। सभी कार्य किए जाने हैं। इनके लिए आगे बढ़ें। हृदय से कार्यों को करें। चिन्ता न करें कि अन्य लोग तो कार्य कर ही नहीं रहे। आनन्द के लिए कार्य को करें, सूझबूझ से ये समझ कर कि यह प्रशिक्षण काल है। जब आप कार्य करेंगे तो आनन्द प्राप्त होगा। दूसरे व्यक्ति की अपेक्षा आप बेहतर प्रशिक्षित हैं। दूसरे व्यक्ति की अपेक्षा आप उच्च दर्जे पर हैं। अतः हमें उच्च दर्जे पर होना है। इसके लिए यह प्रशिक्षण चल रहा है। इस प्रकार से हम इस तैयारी को पूर्ण विस्तार पूर्वक व्यवहारिकता में ला सकते हैं और देख सकते हैं कि अपने अहम् और प्रतिअहम् का कार्यान्वयन हम किस प्रकार करते हैं। आज सुबह ही मैने आपको बताया था कि आपका विवेक इस बात को भली भांति आत्मसात कर ले। ठीक है। आप द्वारा किए गए हर कार्य पर आपके प्रशिक्षण की मोहर लगी होनी चाहिए। मान लो आपको मीलों गाड़ी चलानी पड़ती है तो आप की

सबूरी की परीक्षा होती है। आप ही सभी कुछ कर सकते हैं।

हेलिकोप्टर से यदि आपको छंलाग लगानी हो या पैराशूट से कूदना हो तो आप बार–बार इसका अभ्यास करते हैं, बार–बार छलागें लगाते हैं अपनी टागें तुड़वाते हैं, हाथ तुड़वाते हैं, सभी कुछ करते हैं, जब तक आप इस कार्य में कुशल नहीं हो जाते। आप मेरी बात को समझ रहे हैं न। गाड़ी चलाने में भी आप ऐसा ही करते हैं जब तक आप कुशलता प्राप्त नहीं कर लेते। क्या यह ठीक नहीं है?

इन बादलों को अपने अन्दर आते हुए देखने के लिए किस प्रकार हम अपना पूर्ण विश्लेषण करते हैं? किस प्रकार यह बादल हमारे अन्दर आ रहे हैं? अपने भिन्न चक्रों के विषय में पता लगाएं। हम कौन से चक्रों पर पकड़ रहे हैं? इस प्रकार से चित्त निरन्तर चक्रों पर स्थापित हो जाएगा। हमारी चैतन्य लहरियां ठीक हैं या नहीं? क्या हमें चैतन्य लहरियां आ रही हैं? यदि नहीं आ रहीं तो कौन से चक्रों पर हमें पकड़ है? कौन सी पकड़ है? मुझे अपनी कुंडलिनी उठानी चाहिए और देखना चाहिए कि पकड़ कहां हैं। मैं ध्यान करता हूँ या नहीं? यदि मैं ध्यान करता हूँ तो क्या ऊंघते हुए ध्यान करता हूँ या वास्तव में ध्यान में होता हूँ? क्या मैं वास्तव में ध्यान महसूस करता हूँ या नहीं? क्या मैं चुस्त होता हूँ या नहीं? ये सारी चीजें मेहनत, निष्ठा से पूरी तरह से और सच्चाई से कार्यान्वित की जानी चाहिएं। यह सारी प्रक्रिया आपके अन्दर है–आत्मन्येवा आत्मनः जायते। आप देखें कि यह बड़ा अजीब सम्बन्ध है कि आत्मा से ही आत्मा सन्तुष्ट होती है! आपको स्वयं से ही सन्तुष्ट होना चाहिए, और कोई नहीं है। माताजी का कोई सम्बन्ध नहीं है। किसी और का भी कार्य नहीं है। अपने लिए आप स्वयं जिम्मेवार हैं। उदाहरण के रूप में आप किसी से पूछे या कहें कि मैं माँ की तरह से हूँ। अब आप सोचें की मैं माँ हूँ–एक ही व्यक्तित्व। दूसरा श्रीमान डान या किंग या कोई और। आपके दो व्यक्तित्व हैं। तो माताजी के सामने यदि आप स्वयं से कह रहे हैं कि मैं ठीक नहीं हूँ, तो माताजी उभर कर आपके सम्मुख आएं और पूछें कि यह कहने से आपका क्या अभिप्राय है? आपको ऐसा क्यों कहना चाहिए? क्या खराबी है?

ये बात जब आप स्वयं से कहने लगते हैं जोकि बाह्य है, तब चित्त आपकी आत्मा की ओर जाने लगता है अर्थात माताजी की ओर, और आप वही बनने लगते हैं। और हृदय के माध्यम से महसूस करने लगते हैं। अतः आत्मा को आत्मा से सन्तुष्ट किया जाना चाहिए। इसके बीच में कुछ भी नहीं है। इस द्वैत व्यक्तित्व में केवल आप हैं और आपने ही आपको सन्तुष्ट करना है। एक अज्ञान है और दूसर ज्ञान। अब स्वयं को माता जी के या, ये कहें कि, आत्मा के रूप में देखने का प्रयत्न कीजिए। आप कह सकते हैं कि मात्र एक नाटक है। मात्र इतना सोचें कि आप एक आत्मा हैं तो स्वयं को किस प्रकार सम्बोधित करेंगे? आइये देखते हैं। इस बात को आप इस प्रकार से लें कि मान लो आप मेरे सिंहासन पर बैठते हैं और साथ–साथ मेरे सम्मुख भी बैठते हैं। इस प्रकार आप यहां वहां बैठे हुए हैं। ऐसी स्थिति धारण कर लें और अब स्वयं को नाटक के पात्र के रूप में सम्बोधित करें, "तो बाला आप कैसी है?" बाला उत्तर देती है, 'बेहतर'।

अब अगर आप माताजी से एकरूप हैं तो शनैः शनैः बाला लुप्त हो जाएगी। ठीक है? परन्तु अब भी यदि आपकी चिपकन बाला से है तो वह इस भ्रम में पनपेगी।

आपको चाहिए कि स्वयं को इस प्रकार सम्बोधित करें मानो आप ही माताजी हैं। यह नाटक है, ड्रामा है। शीशे के सम्मुख बैठकर अपने बाह्य (शरीर) को देखें। आप जो चाहे हों, चाहे श्री डान ही क्यों न हों, आप यहां बैठे हैं। अब श्रीडान दूसरे डान को सम्बोधित कर रहे हैं। उसे एक भूमिका ले लेने दो कि "मैं आत्मा हूँ। वो कहेगा, "मै आत्मा हूँ और शाश्वत हूँ। मैं ऐसा हूँ। कोई मुझे नष्ट नहीं कर सकता। मैं सर्वोपरि हूँ। मैं आत्मसाक्षात्कारी हूँ। मैं जानता हूँ कि आत्मा क्या है। तुम क्या बोल रहे हो? और इस प्रकार से वो चीज दब जाएगी, नीचे चली जाएगी। इस प्रकार आपकी गति आरम्भ होती है। ऐसा केवल तभी संभव है जब आप सतोगुणी बन जाएं। आप यदि सतोगुणी नहीं हैं, अहम् आपमें बना हुआ है–मैं ये हूँ–और ऐसी स्थिति में यदि आप गुरु बन जाते हैं तो नोट छापना (धन एकत्र करना) शुरु कर देंगे।

सर्वप्रथम अहम् को नीचे लाना आवश्यक है। अहम् यदि अब भी बना हुआ है तो आप अंहकार का रूप धारण कर लेंगे आत्मा नहीं बनेंगे। अतः सर्वप्रथम इस यात्रा को सतोगुण के मध्य में लाना होगा। यही कारण है कि मैं कहती हूँ कि कोई भी कार्य करते हुए, बातचीत करते हुए आपको ज्ञान होना चाहिए कि जो कुछ भी कर रही है आपकी आत्मा कर रही है। इस प्रकार से आप अपनी आत्मा को कार्यभार दे देते हैं। सभी अवस्थाओं में जब आत्मा प्रभारी होती है तब आप कहते हैं कि अब मैं आत्मा हूँ। उदाहरण के रूप में मान लो आपके पास एक प्रधानमंत्री है, एक उपप्रधानमंत्री है और एक मंत्री है, ठीक है। अब यदि आपकी आत्मा प्रधानमंत्री है और मंत्री को ही प्रधानमंत्री बनना है तो पहले वह उपप्रधानमंत्री बनेगा उसके पश्चात् ही प्रधानमंत्री बन सकता है। परन्तु यदि यह व्यक्ति उछलना शुरु कर दे और कहे कि मैं ही मैं हूँ तो यह अहंकार है।

आप बात को समझें। आप बात को समझ लें तो इसका उल्लघंन नहीं कर सकते। इसको आपने इसमें विलीन करना है और इनको इसमें। चाल इस प्रकार की होनी चाहिए। परन्तु यदि आप केवल यही बनना चाहेंगे तो यही बन जाएंगे, वो नहीं। क्योंकि आप यह नहीं बन सकते। क्या आप मेरी बात को समझे? अतः इसे करते हुए भी शीशे के सम्मुख बैठकर यदि आप स्वयं से कहते हैं कि आप आत्मा हैं, जो कि विराट का अंग–प्रत्यंग है, तथा आप सागर हैं क्योंकि बूंद रूप में आप सागर में गिर चुके हैं, तो आपको यह जान लेना चाहिए कि बूंद रूप में आप सागर में गिर चुके हैं। इस प्रकार से आप सागर बने हैं। यह अवस्था (समझ) यदि नहीं आई तो यह कहना अति होगी कि आप सागर हैं। अतः व्यक्ति को अत्यन्त स्थिर एवं सावधान होना चाहिए– जहाँ तक स्वयं से बर्ताव करने का कार्य है उसमें पूर्णतः स्थिर होना चाहिए। क्योंकि आप जानते हैं कि किस प्रकार यह बुद्धि आपको धोखा दे सकती है।

अतः स्वयं का आंकलन करते हुए अत्यंत–अत्यंत सावधान रहें। यह अवश्य जान लें कि सर्वप्रथम आपको अपने अहम् को जीतना है। अहम् को जीतने के लिए अपनी भाषा एवं शैली को परिवर्तित करना होगा। तृतीय पुरुष (Third Person) में बात करें। यह बहुत अच्छा तरीका है। अपने बारे में जब आप बात करते हैं तो कहें 'ये माताजी मेरी बात नहीं सुनेंगी, ये माताजी ऐसा नहीं करेंगी'। अब देखें कि इससे क्या होता है। ये माताजी आपको कुछ बताएंगी। एक बार जब आप इस माताजी को स्वयं से अलग करने लगेंगे तो यह अहम् लुप्त हो जाएगा। क्या आप समझे? जैसे आप कह सकते हैं

कि यह बाला ऐसा है। वो नहीं सुनेगा। तो जो भी सच्चा बाला आपमें बचा है वही ठीक है। इस प्रकार से अपने अहम् से आप मुक्त हो जाते हैं और अपने चक्रों को समझने लगते हैं। कौन से चक्र पर पकड़ रहे हैं, कहां पकड़ आ रही है, क्यों पकड़ आ रही है? वास्तव में अहम् से मुक्ति पा लेना आपके लिए आसान हो जाएगा। तब आप देखें कि सहज–योगी क्या करते हैं। कहने से अभिप्राय यह है, और आप जानते है, कि मैं सभी के और हर चीज़ के विषय में जानती हूँ। मुझे यह पूछने की आवश्यकता नहीं है कि सच्चाई क्या है। फिर भी मैं क्यों पूछती हूँ? चीज़ों के विषय में अपना पूर्ण अनजानपना दिखाती हूँ। लोग सोचते हैं कि वास्तव में अब कभी नहीं पकडूंगा। मैं यदि जानना चाहूं कि पकड़ कहां है तो मैं पता लगा सकता हूँ परन्तु मैं ऐसा करना नहीं चाहता। तब मैं कहती हूँ, ठीक है, मैं तुम्हें बताऊंगी कि पकड़ कहाँ है। ऐसे मौके पर व्यक्ति का दृष्टिकोण यह भी हो सकता है कि मुझे बता देना चाहिए, नहीं तो माताजी को पता कैसे चलेगा? कितनी अजीब बात है। दूसरे लोग ऐसा भी सोच सकते है कि 'मैं जानता हूँ कि वे (माताजी) कहां पकड़ रही हैं और यह बात मुझे बता देनी चाहिए। माताजी भी इस बात को जानती है परन्तु वह मेरी परीक्षा ले रही हैं। मुझे सावधान रहना चाहिए। इस अवस्था में लोग गलतियां करते हैं।

मैं जब उनसे पूछती हूँ कि वह कहां पकड़ रहे हैं तों कहते है कि मैं बाएं हृदय पर पकड़ रहा हूँ परन्तु पकड़ बहुत मामूली है–हो गया सब खत्म। आपको बहुत कम अंक मिले, इस प्रकार 'आप कम नम्बर लेते हैं। खैर कुछ तो आपको मिल ही जाता है क्योंकि आप ईमानदार हैं। जो भी हो मान लो किसी को हृदय की पकड़ नहीं है और आपको हृदय आ रहा है तो आप कहेंगे हृदय। यह ईमानदारी है। तब मैं आपको बताऊंगी कि हृदय की पकड़ किसको है। परन्तु आपको यदि यह पकड़ है तो आप एकदम से इस बात को स्वीकार करें। यदि आप स्वीकार नहीं करते तो आपके नम्बर कम हो जाते हैं, यह अच्छी कला नहीं है। मैं ठीक नहीं हूँ, मैं नहीं जानता.... यह अच्छी कला नहीं है। आपको बताना होगा कि कौन पकड़ रहा है। परीक्षा में पास होने के लिए तब आप अधिक चित्त लगाएंगे। यह मात्र परीक्षा है। क्यों? क्योंकि कल आपने आत्मसाक्षात्कार देना है, कल आपको गुरु बनना है। यह सभी चीज़े बतानी हैं। अतः यह प्रशिक्षण का समय है। यह सब बातें पूछ कर मैं आपको प्रशिक्षित कर रही हूँ। परन्तु मैंने देखा है कि लोगों में इसका भी अंहकार हो जाता है। जब मैं लोगों से पूछती हूँ कि मुझे बताओ कि मुझे कहां पकड़ है तो इस बात पर भी उन्हें अहम् हो जाता है। आपने अत्यंत मूर्खातापूर्ण बात कही, सभी को स्पष्ट देखना चाहिए। अतः बच्चों की तरह से सहज व्यक्तित्व बनें। बच्चे आते हैं, यह चीज़ देखते हैं, वो चीज़ देखते हैं, समाप्त। मैं कहूंगी कि वह अथक कार्य करते हैं। उन्हें इस बात की चिन्ता नहीं होती कि कुछ कहना, कुछ दिखावा करना है–कुछ नहीं। वो जो देखते हैं, वो कह देते हैं। यह सभी दिखावा बाज़ी लोग करते हैं। वह कहते हैं, हो सकता है मैं ही पकड़ रहा हूँ या कुछ ऐसा हो। उनकी संवेदना यद्यपि ठीक होती है फिर भी वे अपने पर विश्वास नहीं कर पाते। बच्चे पूर्ण विश्वस्त होते हैं, उनसे कुछ भी पूछिए वो तुरन्त बताते हैं कि ऐसा–ऐसा है। परन्तु आप यदि किसी से पूछें कि यह चीज़ कौन से रंग की है, तो वो उत्तर देंगें या तो हरी या लाल। जैसे हमारे यहां एक वृद्ध व्यक्ति था, ज़्यादा वृद्ध नहीं, मेरी आयु का था। उसे मेरे घर पर आना था, तो उसने मुझे फोन किया, कहने लगा कि मैं

आपके घर आना चाहता हूँ, किस प्रकार आऊं? मैंने कहा यह स्थान आक्सटैंड है। आप यहां आ सकते है। परन्तु यदि टैक्सी न मिली तो कठिनाई होगी। अतः Hertz Green आ जाओ। उसने पूछा कहाँ? मैंने उत्तर दिया Hertz Green। वह कहने लगा Hertz Blue? मेरी समझ में नहीं आया कि वह हरे को नीला किस प्रकार कह रहा था। बार–बार समझाने के उपरान्त भी उसकी समझ में नहीं आ रहा था। तब मैंने उससे कहा कि पत्ते का कौन सा रंग होता है। कहने लगा नीला। ग्रेगॉर वहीं मौजूद था। मैंने कहा देखो अब यह पत्ते का रंग नीला बता रहा है। उसने फोन उठाया और उससे कहा कि तुम Hertz Blue आ जाओ। कहने लगा कि श्रीमाताजी कम–से–कम यह तकलीफ नहीं होगी। वो आएगा ही नहीं। इतना भ्रमित व्यक्ति था। नीले और हरे रंग में ही भ्रमित था। आप भी इससे लड़ रहे हैं। यही सत्य है। यह देखने के लिए चित्त का चौकन्ना होना आवश्यक है कि हम भ्रमित तो नहीं है। यदि भ्रमित हैं तो अपने चक्रों को ठीक करके भ्रम को दूर करें। आइये सभी चक्रों का एक छोटा सा प्ररीक्षण करते हैं। आपको मेरे प्रश्नों का उत्तर देना है।

यदि हँसा चक्र पकड़ रहा हो तो वहां क्या करना चाहिए? प्रश्न का उत्तर दीजिए।

–हँसा चक्र पकड़ रहा है तो हमें क्या करना चाहिए।

–हँसा चक्र पकड़ रहा हो तो आपको कहना है:
ऊँ त्वमेव साक्षात् श्री हंसा चक्र स्वामिनी साक्षात् श्री आदिशक्ति माताजी श्री निर्मला देव्यै नमोः नमः
अपनी उंगलियां चक्र पर रख कर तीन बार मंत्र कहें।

इस चक्र पर क्या होता है? दोनों नाड़ियाँ 'ह' और 'ठ', ईड़ा और पिंगला यहां पर आकर मिलती हैं और विपरीत दिशा की ओर मुड़ती हैं और इस बिन्दु पर विपरीत दिशा में मुड़ती हैं। तो दाईं नाड़ी बाईं ओर को तथा बाईं नाड़ी दाईं ओर को चलायमान होती है। यह दोनों नाड़ियां हँसा चक्र पर मुडती हैं–आज्ञा से नीचे। आज्ञा के नीचे हँसा चक्र है। आपको या दाईं ओर की समस्याए होती है या बाईं ओर की। बहुत से लोग सर्दी वगैरह की वज़ह से भी हँसा चक्र पर पकड़ते हैं। सर्दी को दूर करने की मैंने आपको बहुत सी विधियां बताई हैं। बाईं ओर की कमी के कारण यदि हँसा चक्र की पकड़ हो तब आप क्या करेंगे, बताएं।

यह ईड़ा नाड़ी है, जो बाईं ओर से आकर दाईं ओर जाती हैं। अतः आपको महाकाली या ईडा नाड़ी स्वामिनी का मंत्र लेना होगा। अभी आप लोग यह मंत्र कहें क्योंकि आपको दाईं ओर की पकड़ आ रही है:
ऊँ त्वमेव साक्षात श्री ईड़ा नाड़ी स्वामिनी साक्षात् श्री आदिशक्ति माताजी श्री निर्मला देव्यै नमोः नमः तीन बार इस मंत्र को कहें।

एक अन्य चीज़ है, मान लो आपको दाईं ओर की पकड़ है या ज़िगर की समस्या है, ऐसी स्थिति में आप क्या करेंगे, प्रकाश का उपयोग करेंगे, सूर्य की किरणों का उपयोग करेगें या कुछ और। आपको सूर्य नाड़ी की–दाईं ओर की समस्या है या पकड़ है। इसकी गरमी को दूर करने के लिए आपको कोई ठंडी चीज़ इस्तेमाल करनी होगी। ऐसे समय पर आपको कहना होगा–आपको 'चँद्र' का मंत्र लेना होगा। दाईं ओर को यदि गरमी है तो 'चँद्र' का मंत्र लेने से यह शान्त हो जाएगी। यदि बाईं ओर की पकड़ है तो 'सूर्य' का नाम लेने से यह दूर हो जाएगी। मान लो आपको भूत बाधा है तो जाकर धूप में बैठ जाएं। सारे भूत भाग जाएंगे। सूर्य से भूत भागते हैं। परन्तु यदि आप अंहकारी हैं तो जाकर चाँदनी में बैठें, हो सकता है आप थोड़े से पगला जाएं। (सभी लोग हँसते है)।

अहं पर विजय पाकर आप स्वयं को कैसे पहचानें

(परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन)
डालिस हिल – 18 नवंबर 1979
(हिन्दी रूपान्तर)

एक ऐसी घटना जिसके माध्यम से परमात्मा की सृष्टि पूर्णता को प्राप्त करेगी और अपना अर्थ समझेगी। ये इतनी महान बात है। ये इतनी महान घटना है। संभवतः ये बात हम महसूस नहीं करते। परन्तु जब हम कहते हैं कि हम सहजयोगी हैं तो हमें इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि सहजयोगी होने के लिए आपका कितना सामंजस्य सहजयोग के सत्य से होना चाहिए तथा इतनी सारी असामंजस्यताएं, जो हमारे साथ चिपकी हुई हैं इनसे छुटकारा पाना होगा। लोग इसे बलिदान कहते हैं। मैं नहीं सोचती कि यह बलिदान है। आप यदि ये सोचते हैं कि आपके मार्ग में कोई रुकावट है तो उस बाधा को दूर करने का प्रयत्न करते हैं। इसी प्रकार से अपनी बाधाओं से जब आप मुक्त हो जाते हैं तो ये बात आपको समझ में आ जाएगी। बाधाएं आपके मार्ग में खड़ी हैं और आपकी उन्नति को रोक रही हैं। अतः इन सारी असामंजस्यताओं को अपने मस्तिष्क से पूरी तरह बाहर निकाल फेंकें और अपनी आत्मा से एकरूप हो जाएं, असामंजस्यताओं से नहीं।

मेरे विचार से यहाँ के लोगों में भी यह एक समस्या है। जब भी मुझे कोई शिकायत मिलती है या ऐसा कुछ और होता है तो मैं समझ लेती हूँ। तो मैं समझ लेती हूँ कि सहजयोग के विषय में समझ का स्तर अभी तक पूरा नहीं है। यह बहुत बड़ा कार्य है और यदि आप लोगों ने ही इसे करना है तो आपको बहुत उन्नत होना होगा। आप लोगों को ही यदि इसके लिए संघर्ष करना है तो इसे पूरी तरह से समझना होगा और ये भी जानना होगा कि आप कहाँ खड़े हैं और स्वयं को कितना सुधारना है। क्योंकि आप ही लोग हैं जिन्होंने सहजयोग को इसके गंतव्य तक पहुँचाना है। जहाँ तक मेरा प्रश्न है अब मुझे और कुछ नहीं करना। मैं कर चुकी हूँ। अब आपने इसे प्राप्त करना है इसमें उतरना है और सभी कुछ परिवर्तित करना है। ये आपका कार्य है, इसीलिए यह गंभीर मामला है।

दूसरी बात जो मैं हमेशा कहती रही हूँ कि अहं की समस्या के कारण हम अत्यन्त विघटित (Disintegrated) हैं। परमात्मा से हमारा योग (Connection) कभी ठीक प्रकार से स्थापित नहीं है। जैसे मैंने कहा कि यह यंत्र (माइक) यदि पाँच भागों में बँटा हुआ हो और पाँचों भाग एक दूसरे से झगड़ रहे हों तो आप इस यंत्र से कुछ भी कार्य नहीं कर सकते। चाहे यह अपने ऊर्जा स्रोत से जुड़ा हुआ ही क्यों न हो। इसी प्रकार से अब भी यदि आप लोगों में सामंजस्य नहीं है तो योग की वह अवस्था आप नहीं पा सकते। उदाहरण के रूप में, मैंने देखा है कि लोग यहाँ सहजयोग के लिए आते हैं। परन्तु उनके लिए अन्य आकर्षण एवं अन्य प्राथमिकताएं होती हैं तथा अन्य बहुत सी चीज़ें उनके लिए अत्यन्त महत्व पूर्ण होती हैं। उन चीजों के लिए वे अपना सारा समय बर्बाद करते रहते हैं और फिर कहते हैं कि 'श्रीमाताजी सहजयोग में हमारी उन्नति नहीं हो रही।' जैसे पहले श्री वेणुगोपालन ने बताया कि यदि आप निश्चय कर लें कि 'हमें सर्वप्रथम सहजयोग करना है बाकी सभी चीज़ें गौण हैं', केवल तभी आपके अन्दर वास्तव में सहजयोग स्थापित होगा। तभी हम उच्च स्तर के कुछ सहजयोगी प्राप्त कर सकेंगे। मैं जानती हूँ कि कुछ लोग मध्यम दर्जे के भी होंगे, कुछ बिल्कुल बेकार होंगे और कुछ पूरी तरह से बाहर फेंक दिए जाएंगे। मैं ये भी जानती हूँ कि यहाँ पर सभी प्रकार

के लोग आएंगे।

अब आप लोगों ने निर्णय करना है कि आप किस स्थान पर हैं? किस सीमा तक आप जाएंगे? अन्य सहजयोगियों की छोटी–छोटी तुच्छ चीजों के विषय में यदि आपने अपना समय व्यर्थ करना है तो आपका विघटन बढ जाएगा। आप अकेले पड़ जाएंगे क्योंकि इस प्रकार के सभी निर्णय अहं के माध्यम से ही होते हैं। 'ये मुझे पसन्द नहीं हैं, मैं ऐसा नहीं करता, ऐसा मुझे दिखाई नहीं देता' आदि–आदि। किसी प्रकार से यदि आप अपने अहं की कार्यशैली को देख लें तो इससे मुक्ति पा सकते हैं। यही कार्य आपने करना है। अहं से लड़ाई नहीं करनी। मैं ये कभी भी नहीं कहती कि अहं से लड़ाई करो, मैं ये कहती हूँ कि समर्पण करो, यही एक मात्र उपाय है जिससे आपका अहं दूर हो सकता है।

यही कारण है कि पश्चिमी देशों में आध्यात्मिक विकास भारत से कम है, ये बात आपने देखी है। श्री वेणुगोपालन जी को ही लो। वो प्रशंसनीय हैं। वो एक ऐसे आदमी हैं जो सराहनीय कार्य कर रहे हैं। भारत में वे एक अत्यन्त ऊंचे पद पर नियुक्त हैं। यहां पर मैंने देखा है कि कोई बर्तन धोने वाला व्यक्ति भी सहजयोग में आता है तो उसका भी अहम् इतना बड़ा होता है। हमारे (भारत के) प्रधानमंत्री का भी अहम् इतना अधिक नहीं होता जितना उसका है। वो बात करता है कि "मैं ये कार्य नहीं करता" आदि आदि। जिस प्रकार लोग बाते करते हैं मुझे हैरानी होती है। मानो हर आदमी इंग्लैड का सम्राट बन गया हो! जब लोग यहां आएं तो आपको बताना चाहिए कि 'व्यर्थ की बहस करके श्रीमाताजी की शक्ति को बर्बाद न करो।' यहां पर सभी लोग अपना कोई अन्त नहीं समझाते। पहली बार जब वो आते हैं तब भी उनमें यह बहुत बड़ी बाधा होती है। अत्यन्त कठिन प्रतीत होता है। हर समय उनको सन्तुष्ट करने के लिए उनके अहम् की सराहना करनी पड़ती है ताकि वे रास्ते पर आ जाएं या समझ जाएं। यही कारण है कि वहां पर उन्नति कम हो जाती है।

जहां तक श्री वेणुगोपालन का सवाल है तो ये और उनकी पत्नी सभी प्रकार के उल्टे–सीधे गुरुओं के पास गए। क्योंकि भारत में भी ये एक अन्य प्रकार की अतिशयता है कि हमें सभी संतों का सम्मान करना चाहिए। परन्तु इस प्रकार के संत झूठ–मूठ के संत हैं। केवल झूठ–मूठ के ही नहीं उनमें से कुछ तो राक्षस हैं। वो खुद तो अपने मुँह से कहेंगे नहीं कि 'हम राक्षस हैं'। वो लोग ये नहीं कहते कि हम राक्षस हैं और न ही अपने असली रूप में सामने आते हैं। वे सीधे–सच्चे साधक उनके पास आते हैं, अपना हृदय उन्हें समर्पित करते हैं, सभी कुछ करते हैं और अन्त में उन्हें पता चलता है कि वे तो राक्षस हैं। जब उन्हें पता चलता है कि ये राक्षस हैं तब वे हैरान हो जाते हैं। वापिस आकर वे किसी अन्य गुरु के पास जाते हैं और फिर किसी अन्य के पास। परन्तु वो इस हानि की पूर्ति कर लेते है क्योंकि उन्हें ये पता चल जाता हैं कि हानि हो गई है तथा सत्य का भी ज्ञान हो जाता है और ये भी जान जाते हैं कि उन्हें किस चीज़ की आशा करनी चाहिए। उस देश का ये आशीर्वाद है कि लोगों को पता चल जाता है कि किस चीज़ की आशा करनी चाहिए। उन जैसे अच्छे किस्म के लोग किसी ऐसे व्यक्ति के पास नहीं जाने चाहिएं जो चमत्कार दिखाते हों या इन्द्रियार्थवाद दर्शाते हैं। ऐसे लोगों के पास न जाकर ये साधक सूक्ष्म लोगों के पास जाते हैं जो बहुत बालाक हैं, जो एक प्रकार का दिखावा करते हैं और कहते हैं–नहीं नहीं, इस मार्ग से तुम उच्चतम उपलब्धि प्राप्त कर

सकते हो। भारत के अधिकतर सहजयोगियों को भी इन चीज़ों से निकलना पड़ा। गाँवों के या कुछ ज़िलों के लोगों के अतिरिक्त अधिकतर शहरी लोग किसी न किसी गुरु के पास गए। परन्तु इतना सब कुछ होने के बावजूद भी उन्होंने सब कुछ छोड़ दिया है। मैंने उन्हें बताया है कि आपने इन लोगों की जूतामार क्रिया (Shoe Beating) करनी है। प्रतिदिन सुबह वे (वेणुगोपालन) एक घण्टे तक साधना करते हैं चाहे कितने भी व्यस्त हों। यहाँ पर तो लोग सुबह उठने के नाम से ही नाराज़ हो जाते है। कहने से अभिप्राय ये है कि ऐसे सुस्त लोगों का कोई क्या करे! ये अत्यन्त कठिन कार्य है।

मैं यही सोचती हूँ कि हमें समझना चाहिए कि पश्चिम में हमारी बहुत बड़ी जिम्मेदारी है क्योंकि यह कार्य लन्दन में ही होना है। आरम्भ में इसे लन्दन में ही घटित होना है और इसलिए आप लोगों पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। आपने अपना और सहजयोग का बार–बार मूल्यांकन करना और समझना है कि अहम् और निःसन्देह प्रतिअहं भी आपको सुस्त करता है। परन्तु अहं मुख्य समस्या है। मैं आपको बता दूँ कि अहं ही मुख्य समस्या है। परन्तु मैं किसी से ये नहीं कह सकती कि ये आपका अहं है। ऐसा कहने पर तो वो उछलकर मेरे सिर पर आएगा। परन्तु अपने अहं को देखने का प्रयत्न करें कि यह किस प्रकार आपको पथभ्रष्ट कर रहा है। आप क्योंकि अपने लिए आनन्द खोज रहे हैं अपनी ही संपदा को खोज रहे हैं। आपकी अपनी ही छुपी हुई संपदा को आप युगों से खोज रहे हैं। इसी संपदा को मैंने आपके सम्मुख अनावृत करना है। कोई व्यक्ति यदि आपको उच्चतम चीज़ देने का प्रयत्न कर रहा हो तो उससे बहस करने की क्या आवश्यकता है? ये तो शक्ति को बर्बाद करना है। इन चीज़ों पर अपनी शक्ति बर्बाद नहीं करें, तुच्छ चीज़ों पर या दूसरे लोगों के दोष ढूंढने में।

वो दिल्ली कैम्प का आयोजन करते हैं। उन्होंने ही हमारी पुस्तकें छपने का प्रबन्ध किया है, सभी कुछ अत्यन्त सुचारु रूप से किया है। मेरे सम्मुख कोई भी समस्या नहीं आई। आप उन्हें किसी भी काम के लिए कहो वो कहते है, 'ठीक है।' मेरी समझ में नहीं आता ये सब कैसे कार्यान्वित होता है। आप सब लोग दिल्ली में रहे हैं। आपने देखा होगा कि वहां पर कितने सारे लोग हैं, कभी कोई समस्या नहीं आई। क्या आपने कभी किसी को शिकायत करते हुए, झगड़ते हुए या परस्पर लड़ते हुए देखा? ऐसा कुछ भी नहीं है।

हर समय दूसरों में दोष ढूँढते रहना, दूसरों को दोष मढ़ते रहना, विवेक का चिन्ह नहीं है। दोनों ही चीज़ें गलत हैं। सर्वोत्तम बात तो विवेकशीलता की ओर बढ़ना और स्वयं देखना है कि हम अधिकाधिक विवेकशील बन रहे हैं। आपमें से कुछ लोग वास्तव में बहुत उन्नत हैं और कुछ लोग ऊपर–नीचे होते रहते हैं तथा कुछ अन्य अभी बहुत ही निम्न–स्तर पर हैं। अतः हम सबको एक साथ चलना होगा। किसी एक व्यक्ति ने यदि कुछ पा लिया तो सहजयोग को इसका कोई लाभ नहीं। जैसा मैंने आपको बताया, सामूहिक उन्नति ही कार्य को करेगी और आप सबने सामूहिक रूप से इसे कार्यान्वित करना है। कितनी मधुर बात है कि आज विश्व–भर में आपके भाई–बहन हैं। जब आप वहां जाएंगे तो वे पूर्ण हृदय से आपका स्वागत करेंगे जिस प्रकार आपने पूर्ण हृदय से यहाँ उनका स्वागत किया। परन्तु हम सबको इतना उन्नत होना होगा, उस बिन्दु तक आना होगा, जहां हम अत्यन्त प्रेम से खुले दिल से बिना किसी चिन्ता या भय के एक दूसरे का सामना कर सकें और कह

सकें कि वे हमारे भाई हैं और हम उनके भाई हैं तथा हमें उनसे प्रेम करना है।

ऐसा तभी सम्भव हो सकता है जब हम भयमुक्त हों क्योंकि इसका दूसरा पक्ष ये है कि अहं के साथ भय भी जुड़ा रहता है, क्योंकि यह दूसरों पर आक्रमण करता है और ये भी जानता है कि अन्य लोग भी आक्रमण कर सकते हैं। अतः इस विषय में भी सोचना होगा कि इससे हमें किसी प्रकार का लाभ नहीं होगा। कभी अपना तिरस्कार न करें। आत सन्त हैं, ये बात आपको समझनी होगी। विश्व में आप ही लोग आत्मसाक्षात्कारी हैं। कितने लोग ऐसे हैं जो कुण्डलिनी उठा सकते हैं, कितने लोग समझते हैं कि चैतन्य लहरियाँ क्या हैं?

गुरु पूजा के दिन मैं आपको बताने वाली हूँ कि आपने क्या उपलब्धियाँ प्राप्त कीं और आपके अन्दर अब कितनी शक्तियाँ विकसित हो चुकी हैं और कार्य कर रही हैं। सहजयोग के माध्यम से किस प्रकार आपके चक्र जागृत हो गए हैं। वो जैसे कहते है, 'हाँ, ये घटित हो गया है। परन्तु आप इसके विषय में आप क्या कर रहे हैं? किसी भी व्यक्ति के साथ घटित होने वाली ये महानतम घटना है, आप ये बात जानते हैं। आप ये भी जानते हैं कि ये वो महानतम घटना है जिसकी बहुत समय पूर्व 'अन्तिम निर्णय' (Last Judgement) कहकर भविष्यवाणी की गई थी। आप जानते हैं कि यही रास्ता है। आपका आंकलन होने वाला है। अतः आपको कठिन परिश्रम करना होगा। हमें कार्य करना होगा। ठीक है कि बिना किसी प्रयत्न के आपको ये दे दिया गया। परन्तु इसे बनाए रखने के लिए, और अधिक उन्नत करने के लिए हमें पूर्ण निष्ठापूर्वक इसे कार्यान्वित करना होगा।

अपने अन्तस में इसे अधिक से अधिक प्राप्त करने के लिए अपने अन्दर आत्म–सात करने के लिए यह अत्यन्त विनम्र दृष्टिकोण है। इसकी बूँदें अपने मस्तिष्क में इस प्रकार बरसने दें कि ये मस्तिष्क को पूरी तरह से आच्छादित कर ले। इस शाश्वत आशीर्वाद को अपने अन्दर आने दें। मैं बहुत ही उत्सुक हूँ। स्वयं को तुच्छ व्यक्ति न बनाएं, अपनी कल्पना को विस्तृत करें, अपने विचारों को विशाल बनाएं क्योंकि अब आपका सम्बंध बहुत विशाल चीज़ से है, विशालतम से, आद्य (Primordial) से, उच्चतम से, विराट से है। आप यदि अपने महत्व को महसूस करेंगे तो इसे कार्यान्वित कर लेंगे।

आप यदि किसी भारतीय सहजयोगी को देखेंगे तो हैरान हो जाएंगे। वो केवल दो, तीन या चार घण्टे सोता है फिर भी अपनी साधना नहीं छोड़ता, पूरी नींद यदि ले सके तो ठीक है। प्रातःकाल एक घण्टे की साधना अवश्य होनी चाहिए। चाहे जैसे भी हो वह ये साधना करता है। परन्तु नींद का क्या? अपने सभी जन्मों में हम सोते ही रहे हैं। आपको स्वयं को सुधारना होगा, ऊपर उठना होगा। अपनी उत्क्रान्ति प्राप्त करने के लिए आपको आगे बढ़ना होगा। यही आवश्यक बात है।

मैं बता रही हूँ कि आप अपने स्वार्थ (Selfishness) को देखें। स्वयं को पहचानना ही महानतम स्वार्थ है। आप स्वयं को यदि नहीं पहचानते तो सारा स्वार्थ बेकार है। संस्कृत में इसे स्वार्थ कहते हैं। इसका सन्धिछेद यदि करें, ये है स्वः+अर्थ है। स्वः अर्थात आत्मा और आत्मा का अर्थ खोजना ही महानतम स्वार्थ है। इसका यही अर्थ है।

हमें खुशी है कि वह (वेणुगोपालन) यहां पर हैं और हम भी भारत जाएंगे। अगले वर्ष हम भारत जाने की योजना बना रहे हैं और वहाँ पर दिल्ली तथा मुम्बई के बहुत से लोगों से मिलेंगे, सभी आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। वो योजना बना रहे हैं

कि किस प्रकार आपका स्वागत करना है। आपके जाने पर उन्हें बहुत प्रसन्नता होगी कि लन्दन तथा अन्य स्थानों से सहजयोगी आए। आप जानते हैं कि किस प्रकार वे आपकी देखभाल करते हैं और कितने प्रसन्न एवं आन्नदित होते हैं।

हमसे बहुत सी गलतियां हुई हैं। हमें चाहिए कि इन गलतियों को समझें क्योंकि ये समस्या हमारे बहुत अधिक सोचने, बहुत अधिक पढ़ने तथा बहुत अधिक प्रभुत्व जमाने के कारण है। परन्तु इन चीज़ों से हम बड़ी आसानी से मुक्ति पा सकते हैं, छुटकारा पा सकते हैं। स्वयं को निर्लिप्त करना होगा और अपने को संबोधित करते हुए स्वयं को देखना होगा, "अब श्रीमन आप कैसे है?" ऐसा यदि आप कहेंगे तो तुरन्त आपका चित्त आपके अन्दर से निकलकर आपके बाह्य अस्तित्व को देखेगा। जितना स्पष्ट आप स्वयं को देखेंगे उतना ही अच्छा है आपने अपना सामना करना है। आप अपना सामना नहीं करते क्योंकि ऐसा करने से आपको डर लगता है। क्योंकि आप दूसरे लोगों के प्रति आक्रामक रहे हैं इसीलिए आप अन्य लोगों के अपने प्रति आक्रामक होने से घबराते हैं। परन्तु स्वयं को देखने में कोई आक्रामकता नहीं होगी क्योंकि जब आप स्वयं को देखते हैं तो यह पूर्ण अवस्था होती है। किसी के प्रति न तो आक्रामक बनें और न ही कोई अन्य आपके प्रति। आप तो मात्र स्वयं को स्पष्ट देखें, यही कार्य आपने करना है।

शनैः शनैः आप अपने चक्रों को देखने लगते हैं, बाधाओं को देखने लगते हैं और जान जाते हैं कि किस प्रकार ये समस्याएं उत्पन्न होती हैं। परन्तु सभी को तुरन्त परिणाम चाहिए! ठीक है आपको शीघ्र परिणाम चाहिए। परन्तु क्या आपभी वैसे ही हैं। आप यदि वैसे हैं तो आपको शीघ्र परिणाम प्राप्त होंगे और यदि आप उस स्तर के नहीं हैं तो स्वयं के प्रति शान्त हो जाएं। मेरे प्रति नहीं स्वयं के प्रति। मैं कह रही हूँ कि आपको शान्त होना होगा क्योंकि आपके अन्दर समस्याएं हैं। आपको स्वयं के प्रति सबूरी करनी होगी किसी अन्य के प्रति नहीं। यह मुख्य बिन्दु है। आप यदि स्वयं के प्रति शान्त हैं तो युगों पूर्व दिए गए वचन के अनुसार आपको उपलब्धि प्राप्त हो जाएगी। परन्तु इसके लिए आपको स्वयं से शान्त रहना सीखना होगा, स्वयं पर क्रोधित नहीं होना होगा। स्वयं को दूषित नहीं करना होगा। दूसरों के प्रति आक्रामक व्यवहार नहीं करना होगा। करने के लिए यह अत्यन्त सामान्य, अत्यन्त सहजतम कार्य है। परन्तु अपने जटिल जीवन और जटिल विचारों के कारण हम इन चीज़ों में जकड़े गए हैं। बिना किसी कठिनाई के अत्यन्त सुगमता से इन चीज़ों से निकला जा सकता है, फिसलकर इनसे बाहर आया जा सकता है। मैं जानती हूँ कि आप ये कार्य कर सकते हैं। अतः मेरे पिता, मेरी बहन, मेरा भाई आदि चीज़ों को भूल जाएं। एकदम से ये सारी समस्याएं टल जाएंगी। ज्यों ही आपका जीवन सीधा चलने लगेगा सारी समस्याएं खाक हो जाएंगी। आपके प्रकाश के अतिरिक्त कुछ भी बाकी न बचेगा तथा वो लोग रह जाएंगे जो प्रकाश प्राप्ति आत्म–साक्षात्कार प्राप्ति के लिए आपके पास आते हैं।'

मैं जानती हूँ कि गुरु पूजा पर आपको बहुत आनन्द प्राप्त होगा और इससे पूर्व, मेरी प्रार्थना है, कि स्वयं को तैयार करें। मैं कोई महान कार्य करूंगी। परन्तु उसके लिए मेरे सम्मुख पात्र होना चाहिए। अतः अपनी तैयारी करें, इसके विषय में सोचें क्या आप दूसरों से प्रेम करते हैं? क्या आप प्रेममय हैं? क्या आप सभी से प्रेम करते हैं? दूसरों से प्रेम करने की सोच ही अत्यन्त महान है। कहने से अभिप्राय है कि आप मुझसे पूछें क्योंकि मैं सदा

यही सोचती हूँ कि मुझे कितना प्रेम करना है। आप देखते हैं कि दूसरों को देने के लिए मेरे पास कितना प्रेम है! ये सोचें कि अन्य लोगों से प्रेम करना कितना महान है।' आप जानते हैं कि कभी–कभी किस प्रकार से लोग मुझसे व्यवहार करते हैं, भयंकर! क्या ये बात ठीक नहीं है? फिर भी मैं उनसे प्रेम करती हूँ, उनसे खेलने में आनन्द लेती हूँ।

इसी प्रकार आपने भी प्रेम करना है और प्रेम ही वो चीज़ है जो कमल की तरह से आपके सम्मुख सौन्दर्य–पूर्ण खिल उठेगी। कमल की पंखुड़ियाँ जब खिलती हैं तो अत्यन्त सुन्दर सुगन्ध बहने लगती है। इसी प्रकार से आपके हृदय भी खुल जाएंगे और प्रेम की सुगन्ध पूरे विश्व में फैल जाएगी। आप भी इससे सुरभित हो उठेंगे। मैं जानती हूँ कि ऐसा हो सकता है जितना जल्दी ये घटित हो जाए बेहतर है। अब ये आपकी मर्जी पर निर्भर है कि आप क्या चुनते हैं।

मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ कि इतना सुन्दर संगीत सुनने को मिला और वो भी क्रिसमस से पूर्व। क्रिसमस मेरे लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस बात को आप जानते हैं। इसी प्रकार से अब हम एक अन्य क्रिसमस मना रहे है–अपने अन्दर अवतरित हुए 'एक नए ईसामसीह का क्रिसमस'। आइए उनके आने की तैयारी करें और ये तैयारी स्वयं से पलायन करके नहीं होगी, कार्यान्वित करने से सुन्दरतापूर्वक स्वच्छ करने से ये तैयारी होगी। इस शरीर मन्दिर में यदि आत्मा को स्थापित करना है तो इसे स्वच्छ तो करना ही होगा।

परमात्मा आप सबको धन्य करें

आनन्द

(निर्मला योग से उद्धृत)

सहज योग की महत्ता प्राचीन काल, से ही स्वीकार की गई है। उसे आत्म–साक्षात्कार का सबसे श्रेष्ठ साधन माना गया है। "अयं तु परमो धर्मः यद्योगेनात्म दर्शनम्" (मनु.) योग के द्वारा आत्मदर्शन करना सबसे बड़ा धर्म है। सहज योगान्तर्गत कुण्डलिनी जागरण विधि की दीक्षा वंदनीय माता जी द्वारा दी जाती है। जिससे साधक पल्लावित एवं कुसुमित होकर दिव्य आह्लाद प्राप्त करता है। मुदित प्रेरणाप्रद निश्छल आशीर्वादात्मक प्रसाद वितरण कर अपनी अथाह अमूल्य संपदा का स्वामी बनाने में समर्थ है। समृद्ध अतीत का आकर्षण एवं बीते युग की भव्यता उद्भाषित हो उठती है। आधुनिक युग में समस्त विश्व के लिये सहजयोग महत्वपूर्ण देन है। शारीरिक और मानसिक समृद्धि का महत्वूपर्ण आधार "कुण्डलिनी उत्थान" प्रक्रिया ही है। आध्यात्मिक मूल्यों को जन मानस में पुनः प्रतिष्ठापित करने का प्रशंसनीय प्रयास पूज्य माताजी ने सहजयोग द्वारा सम्पन्न किया है।

निःसन्देह प्राणिमात्र में मानव ही सर्वश्रेष्ठ है और उसका आधार स्वयं उसका चरित्र है। इसी अपने चरित्र के कारण वह सर्वोपरि है। जब तक उसका चरित्र उसके पास है, तब तक उसका यह गौरवपूर्ण अस्तित्व भी अक्षुण्ण है। अन्यथा उसमें एवं अन्य जीवों में कोई अन्तर नहीं होता। संसार में अब तक जितने भी चरित्रवान महापुरुष हुए हैं और संसार जिन्हें पूज्य मानता है एवं नत–मस्तक होता है उन सबने अनादि काल से ही सद्गुणों के आदर्शों की स्थापना की है। इस प्रकार उन्होंने ज्ञानी एवं बुद्धिमान देवात्माओं को बाध्य किया कि वे स्वयं चरित्रवान होकर उनके गुणों का प्रचार एवं प्रसार करें जिससे मानव समाज अपना अस्तित्व बनाये रखने में सफल हो तथा शनैः–शनैः मनुष्यता की ओर अग्रसर होता रहे। चरित्र की महिमा एवं गरिमा अपार है। इस का सांगोपांग वर्णन कठिन है। ऐसे ही देवात्मा पुण्यशीला माताजी श्री निर्मला देवी जी हैं जो साक्षात कुण्डलिनी माता का अवतार हैं। इन्होंने अपने अनूठे सम–सामयिक आचार विचार एवं सदव्यवहार से पूर्वजों के चारित्रिक आदर्शों तथा गुणों को ग्रहण कर संसार के समक्ष एक अद्भुत महान आश्चर्य प्रस्तुत किया है।

साधारणतया मानव जीवन के लिये धर्म अनादिकाल से गूढ़ एवं व्यापक विषय रहा है। विश्व का कोई भाग ऐसा नहीं जहां धर्म किसी न किसी रूप में विद्यमान न हो–देश काल एवं

परिस्थितियों के अनुसार इसका वास्तविक स्वरूप बदलता रहता है। जिन लोगों के विचारों में किसी परम्परागत धर्म को मान्यता प्राप्त नहीं है वे भी व्यापक धर्म के किसी न किसी अंग को स्वीकार कर जीवन यापन करते हैं। धर्म के आरम्भ होने के समय के बारे में भी विवाद है, परन्तु यह तथ्य भुलाया नहीं जा सकता कि समाज व्यवस्था के आरंभ से पूर्व मानव की वह अवस्था किसी न किसी रूप में विद्यमान है। परन्तु स्पष्ट रूप से यह सामाजिक व्यवस्था के समय से ही मानव के समक्ष आया–आज भी समाज से अलग थलग इसका अस्तित्व स्वीकारा नहीं जा सकता। क्रमशः मानव जीवन का विकास होता गया और धर्म का स्वरूप भी समाज के लिये स्पष्ट होता गया। अतः समाज का अर्थ किसी न किसी धर्म से ही लिया जाता है। धर्म का सामाजिक रूप निश्चित होते ही तत्सम्बन्धी विचार कि धर्म क्या है, उठता है। इस विवेचन में "जो धारण करे वही धर्म है"–धर्म का रूप निश्चित हुआ जिसके अनुसार संस्कृति का निर्माण हुआ। इसका सामाजिक व्यवस्था के साथ भी गहरा सम्बन्ध है क्योंकि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में इसका स्थान प्रथम है। इसकी पृष्ठभूमि व्यापक है, युग के अनुसार परिस्थितियों में परिवर्तन होता है। इन्हीं के आधार पर उस विशिष्ट युग की मान्यताऐं बनती हैं। स्वधर्म सिद्धि इसके पालन से ही सम्भव है, पर धर्म से इसका विरोध सम्भव नहीं (गीता) आध्यात्मिक क्षेत्र में कर्म भक्ति और ज्ञान को सभी ने मान्यता दी है, अपने स्वभाव व अनुभव को आधार मान कर। यह ध्रुव सत्य है कि प्राणी बिना अपने को वातावरण के अनुकूल बनाये रह ही नहीं सकता–उसके अस्तित्व में ही खतरा पैदा हो जाना स्वाभाविक है। प्राणीमात्र आन्तरिक और बाह्य सामंजस्य की आवश्यकतावश अपने अंर्तजगत में अपने विचारों और अनुभवों के आधार पर विचरण करता है। मानसलोक की यही स्थिति है। अंतर्जगत की अनुभूतियों के आधार पर बर्हिजगत का निर्माण होता है। व्यक्ति काम, क्रोध, लोभ, मोह, हानि, लाभ, जीवन, मरण, यश, अपयश से रहित शुद्ध हृदय से सुख दुःख आदि द्वन्दों में स्थिर बुद्धि वाला सिद्धि असिद्धि में समता भाव से सम्पन्न और निष्पक्ष भाव से लोक संग्रह की भावना लेकर अपनी आत्म तुष्टि में ही व्यावहारिक जीवन का संचालन करता है, जिससे अन्तर्जगत और बाह्यजगत में किसी प्रकार का असामंजस्य न हो। वस्तुतः आत्म ज्ञान का व्यष्टि और समष्टि रूप में ठीक निरूपण इसी आधार पर किया जा सकता है। मानव जीवन का विकास और उसके उद्देश्य की प्राप्ति इसी में संनिहित है। वर्तमान जटिल परिस्थितियों में सहजयोगान्तर्गत कुण्डलिनी उत्थान की अनुपम प्रक्रिया जो माता जी श्री निर्मला देवी द्वारा अनुसंधानित एवं प्रसारित है वह धर्म की परिभाषा के अन्तर्गत है क्योंकि वे अनुप्राणित आनन्द लहरियों द्वारा "आत्मवेदं सर्वत्र" तथा "आत्म दीपोभव" का बोध कराती हैं। जिस प्रकार अपने घर के दीपक को प्रकाशित करने के पश्चात ही दूसरे के घर का दीपक जलाया जा सकता है। आत्म–ज्ञान होने पर ही यथार्थ लोक संग्रह हो सकता है। आत्म ज्ञानी पुरुष दूसरों के कल्याण के लिये प्रेरित होता है। वैयक्तिक मान्यताओं के आधार पर सत्य निरूपण सम्भव नहीं–यह सब सहज योग द्वारा ही सहज सुलभ है। मन की निरोगता ही वास्तविक निरोगता है। जिसका शरीर बलवान एवं हृष्ट पुष्ट है परन्तु मन में बुरी वासना, असद्विचार, काम, क्रोध, लोभ, मोह, घृणा, द्वेष, वैर, हिंसा, अभिमान, कपट, ईर्ष्या, स्वार्थ आदि दुर्गुण और दुष्ट विचार एवं विकार निवास करते हैं, वह कदापि निरोग नहीं–मन का

रोगी सदा जलता रहता है। वह माताजी द्वारा दर्शाये सहज योग द्वारा ही अमोध शान्ति की उपलब्धि कर सकता है। सुन्दर वही है जिसका हृदय सुन्दर है। इसको शुद्ध करो, एक–एक दोष चुन–चुन कर निकाल बाहर करो, सद्गुणों को ढूंढ–ढूंढ कर हृदय में बसाओ। माता जी का कथन यह भी है कि "धरती का धन–धन नहीं" सच्चा धन हृदय में रहता है। उत्तम विचार और चरित्रबल ही परम धन है। सुख न पहुँचा सको तो दुख तो किसी को न दो; पृथ्वी पर से पाप का भार हल्का न कर सको तो पापमय जीवन बिता कर उसके भार को मत बढ़ाओ। जीवन को निर्मल, सादा, स्पष्ट, सरल, श्रद्धायुक्त आनन्दमय बनाओ और विवेक को सदैव साथ रखो क्योंकि एक सच्चिदानन्द धन निर्गुण निराकार ब्रह्म के सिवा और कुछ भी नहीं है। अतः उस आनन्दमय ब्रह्म का मन से कुण्डलिनी योग द्वारा इस प्रकार मनन का अभ्यास करना कि पूर्ण आनन्द, अचल आनन्द, ध्रुव आनन्द, नित्य आनन्द, आचार आनन्द, अचिन्त्य आनन्द, ज्ञानस्वरूप आनन्द, परम आनन्द, महान आनन्द बस एक आनन्द के अतिरिक्त कुछ भी न हो–ब्रह्म ध्येय है, बुद्धि की वृत्ति ध्यान है और साधक ध्याता है। ध्यान करने पर बुद्धि तन्मय होकर तद्रूप हो जाती है तब यह त्रिपुटी नहीं रहती एकमात्र ब्रह्म ही रह जाता है और साधक की ब्रह्म में स्थिति हो जाती है और तब वह निर्मल आनन्द स्वरूप बन जाता है। इसी को अष्टांग योग में सविकल्प समाधि की संज्ञा प्रदान की गई है। "तत्र शब्दार्थ ज्ञान विकल्पै संकीर्ण सवित की समाप्ति" (पांतजली योग दर्शन 142) उनमें शब्द, अर्थ और ज्ञान इन तीनों के विकल्पों से संकीर्ण मिली हुई समाधि सवितर्क है इसके बाद जब साधक स्वयं ब्रह्म में तद्रूप हो जाता है तब ये शब्द अर्थ ज्ञान नहीं रहते वरन केवल ब्रह्म (आत्मा) का स्वरूप ही रहता है। यही निर्विकल्प समाधि है। 'स्मृति परिशुद्धो स्वरूप शून्येवार्थ निर्मासा निवर्तको' (पा. यो. दर्शन 1143) शब्द और प्रतीति की स्मृति भली भांति लुप्त हो जाने पर अपने रूप से शून्य के सदृश केवल ध्येय मात्र के स्वरूप को प्रत्यक्ष कराने वाली चित्त की स्थिति ही निर्विवतर्क समाधि है। इस समाधि वितंडावाद के चक्कर में न पड़ कर सन्त कबीर जी कहते हैं कि "साधो सहज समाधि भली है" जो सहज योग द्वारा ही सम्भव है। अष्टांग योग के यम नियम आदि कठिन साधनाओं के फेर में एक गृहस्थ को पड़ना उचित नहीं जान पड़ता।

सर्व खल्विदं ब्रह्म (छान्दोग्यपनिषद 31411) जड़ चेतन चर अचर सब में ब्रह्म का ही स्वरूप है। हृदय प्रदीप को प्रज्वलित कर जीवन सफल करने में ही भलाई है।

आनन्द स्वरूप मिश्र

हमारी प्राथमिकताएं क्या हैं?

जब हमें आत्म–साक्षात्कार प्राप्त होता है तब अपने अस्तित्व में घटित हुए आन्तरिक परिवर्तन का ज्ञान हमें नहीं होता। हमें बस इतना महसूस होता है कि किसी सुन्दर और नई चीज ने हमें परिवर्तित कर दिया है। उन्नत होकर हम देखते हैं कि हमारे परिवर्तन के अनुरूप किस प्रकार विश्व परिवर्तित होता हैं, हमें अच्छी नौकरियाँ मिल जाती है, अच्छे मित्र मिल जाते हैं, अधिक शान्ति व चैन प्राप्त होता है। इन सारे आन्तरिक और बाह्य परिवर्तनों को हम देवी के आशीर्वाद के रूप में देखते हैं। ये आशीर्वाद बढ़ते चले जाते हैं और इनकी अभिव्यक्ति के विशेष रूप से बाह्य अभिव्यक्तियों के–जैसे अच्छा स्वास्थ्य, भावनात्मक सफलता और व्यवसायिक सफलता आदि के हम आदी हो जाते हैं। परन्तु जब भी इन अभिव्यक्तियों की संख्या में कमी आ जाती है या कुछ समय के लिए ये रुक जाती हैं, जब हम बीमार हो जाते हैं या किसी और तरह की तकलीफ हमें हो जाती हैं तब हम हैरान होते हैं कि हमारे साथ ये सब क्यों हुआ? हमने ऐसा क्या किया है, तब या तो इम सहजयोग को दोष देने लगते हैं या हममें दोष–भाव आ जाते हैं। इस दोष भावना के कारण हमारे हृदय में असुरक्षा की भावना जागृत होती हैं जिसके कारण आन्तरिक आनन्द लुप्त हो जाता है।

लेकिन इतने जल्दी और इतनी बार ऐसा क्यों होता है? क्योंकि हम ये नहीं देखते कि हमारी प्राथमिकताएं कहाँ हैं। इन आशीर्वादों को अपने हृदय में आत्मसात करने के लिए सर्वप्रथम हमें इनका साक्षी होना चाहिए। इस साक्षी अवस्था में हम समझ पाते हैं कि ये बाहरी आशीर्वाद ही सहजयोग का लक्ष्य है या आध्यात्मिक उन्नति की यही उपलब्धियाँ हैं। वास्तव में हमारी आन्तरिक उत्क्रान्ति तो हमें अपनी आत्मा में तथा परम पूज्य श्रीमाताजी में पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास प्रदान करने के लिए होती है और उसी स्थिति को दृढ़ करने के लिए ये आशीर्वाद हमें मिलते हैं। ये आशीर्वाद सहजयोग में हमारे स्थायित्व की नीवें हैं। परन्तु इन आशीर्वादों को हम साक्षी भाव से नहीं देखते और जब ये बढ़ते हैं तो हम इन्हें अपने अहं का एक हिस्सा बना लेते हैं और इनके घट जाने या लुप्त हो जाने की स्थिति में हम बाईं ओर को या भ्रम के गर्त में चले जाते हैं। अपनी प्राथमिकताओं को यदि हम नहीं देखते तो दैवी आशीर्वादों को साक्षी भाव से कभी नहीं देख सकते। हर सहजयोगी की ये प्राथमिकता होनी चाहिए कि वह इन आशीर्वादों को महसूस करे, प्राप्त करे और इनका पोषण करे। यह कार्य हृदय से होना चाहिए, मस्तिष्क से नहीं अन्यथा हमें लगता है कि क्योंकि हम अपने पति, माँ या बहन को सहजयोग में नहीं ला पाए अतः हम सहजयोग में असफल रहे। ये इसलिए होता है क्योंकि हम सोचते हैं कि सुखमय पारिवारिक जीवन ही हर सहजयोगी का लक्ष्य, अधिकार एवं पारितोषिक हैं। इस प्रकार के दृष्टिकोण के होते हुए हम कभी भी उन्नत नहीं हो सकते। इस अवस्था को हमें पार करना होगा, इससे ऊँचा उठना होगा। आत्मा को महानतम आशीर्वाद के रूप में देखना ही हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। आत्मा ही हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। आत्माभिव्यक्ति की प्राथमिकता ही हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। अपनी हृदयाभिव्यक्ति, हृदय के माध्यम से कार्य करना, आत्मा के प्रकाश से चालित होना और परम प्रिय श्रीमाताजी की कृपा से ज्योतिर्मय होना ही हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए।

आत्मा को यदि हम प्राथमिकता बना लें तो आत्मा द्वारा ज्योतित सारे आनन्द के हम स्वतः ही साक्षी बन जाते हैं। आत्मा ही पूर्ण आशीर्वाद है अतः

इस पूर्ण आशीर्वाद को अपने हृदय में महसूस करना तथा 'क्यों और कैसे' जैसे प्रश्नों को भूल जाना ही हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। सभी को (सहजयोगियों) पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त होता है। जिस दिन व्यक्ति की आत्मा का योग आदिशक्ति से हो जाता है, जिस दिन बूँद सागर में जा गिरती हैं उस दिन से सभी को श्रीमाताजी के प्रेम का पूर्ण आशीर्वाद मिल जाता है और समान रूप से सबकी देखभाल होती है। अतः अपनी आशीर्वादित आत्मा, जो कि शाश्वत है, पूर्ण है, दिव्य स्रोत, को महसूस करना सभी की प्राथमिकता होनी चाहिए। इस महानतम आशीर्वाद के प्रति जागरूक होना, उसके माध्यम से परमेश्वरी से जुड़े रहना ही एकमात्र प्राथमिकता है, परमेश्वरी माँ से योग हो जाने के बाद आत्मा को कुछ और नहीं चाहिए, क्योंकि अब उसे सब कुछ मिल गया, सभी आशीर्वाद उसे प्राप्त हो गए। अब तो वह पूर्ण आशीर्वाद का प्रतिनिधि बन गया। अपनी आत्मा को तथा परमेश्वरी माँ के प्रति उसके प्रेम को समझना तथा आदिशक्ति माँ के बालक होने के महान आनन्द तथा गौरव को समझना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। परमात्मा के परिवार से सम्बंधित होने के आनन्द को अपने हृदय में महसूस करना ही हमारी मुख्य प्राथमिकता होनी चाहिए। सर्व शक्तिमान परमात्मा के बच्चों के रूप में चुने जाने के अर्थ को क्या हम महसूस करते हैं? हमें किस चीज़ का भय है? कौन हम पर आक्रमण कर सकता है? कोई नहीं कर सकता यदि हम श्रीमाताजी द्वारा दी गई सुरक्षा को महसूस करते हैं तो सब मिथ्या है, खेल है, नाटक है।

मैं इससे भी आगे जाने की धृष्टता करूंगा। देवी के नाम की पूर्णतः खुले दिल से, पूर्ण आनन्द से, अपने पूरे प्रेम से और शक्ति से उद्घोषणा हमने करनी है। उनके नाम की उद्घोषणा करना मात्र ही महानतम आशीर्वाद है और अद्वितीय आनन्द।

अपनी प्राथमिकताओं को देखने के लिए अपने चित्त को प्रशिक्षित करना होगा तथा साक्षी भाव को दृढ़ करना होगा। आत्मा के आनन्द और इसके महत्व को खोजने में चित्त हमारी सहायता करेगा। चित्त का ज्योतिर्मय होना जब हमारी प्राथमिकताओं को स्थापित करेगा तो हम उस अवस्था को प्राप्त करेंगे जहाँ न कोई संदेह होगा न प्रश्न होंगे न उत्तर होंगे। जहाँ हम अपने हृदय को खोलकर उसके माध्यम से परमेश्वरी माँ (Divine Mother) के गौरव को देख सकेंगे।

A.de. Kalbermatten

(निर्मला योगा–1981 से उद्धृत)

त्रिगुण

(परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन)

3.2.1978 दिल्ली

जिस शक्ति को आप इस्तेमाल कर रहे हैं उसे Refill कर लेते हैं हम। Modern बीमारी एक और है जिसे हम Tension कहते हैं। 'Tension' मुझे Tension आ गया', पहले किसी को Tension नहीं आता थी। तब तो Tension आना ही हुआ कि आप निकले पुरानी दिल्ली से माताजी के Programme में जाने के लिए। अब 6.30 बजे पहुँचना ही चाहिए, पहले सीट पर बैठना ही चाहिए। देर से जाएंगे, कोई हर्ज नहीं, देर से भी आ सकते हैं। वो समय आप के आने का था आप आ गए। कोई बात नहीं। ऐसी कौन सी आफत मची हुई हैं? भाई मुझे कहाँ जाने का है और आपको कहाँ जाने का है? आराम से बैठेंगे दो चार बातें करेंगे, चलो हो गया सहजयोग पूरा। कौन सी आफत मचाने की चीज है? कोई नहीं। इतने सरल सहज आराम से बैठिए वैसे ही आप को सहजयोग प्राप्त होगा।

मैं देखती हूँ कि सहजयोग में भी लोग इस तरह से Planning करते हैं। मुझे आती है बड़ी हँसी। जैसे आप ये कहें कि दो दिन बाद यहाँ पर फल लगेगा तो मैं मान जाऊं। दो दिन बाद 5 बजे कर 6 मिनट पर यहाँ पर फल लगेगा इस फूल में, ये अगर आप कह दें और करके दिखा दें तो मैं मान जाऊं। जो लोग जितना Planning करके यहाँ पर आते हैं उतना उनकी कुण्डलिनी नहीं जागृत होती। सहज समाधि लागो, सहज लगती है। सहज माने बिल्कुल साधारण तरीके से। ऐसे ही जो लोग होते है उनको ही मिलती है। अब काहे मार–धाड़ किए हो भाई? ऐसी कौन सी आफत आ गई? अभी मुम्बई में एक Programme हो रहा था तो एक साहब ने कहा चलो भई Music चल रहा है, माताजी थोड़ा म्यूजिक कर दें? हमने कहा कर दो भाई। ऐसे ही बैठेगें आराम से। हमारे तो Vibrations चलते रहते हैं, आप Receive करते रहिए। अब उन्होंने ज़रा लम्बा चौड़ा कर दिया जरा Music, तो लोग कहने लगे अब जरा जल्दी खत्म करो, जल्दी खत्म करो। मैंने कहा क्यों भई तुमको मेरा Lecture सुनने का है पर मेरी तो आज तबियत नहीं कर रही। अपने तो तबीयत से चलते हैं, Temperamental आदमी हैं, अभी आज तो भई तबीयत हो नहीं रही। तो म्यूज़िक ही सुनने दो, तुम भी सुनो मेरे साथ। आराम से क्यों नहीं सुनते? अच्छा म्यूज़िक चल रहा है, भई सुनो। ऐसी कौन सी आफत आई है? मेरे तो चल ही रहे हैं Vibrations, मैं चाहे भाषण देऊं, चाहे नहीं देऊं, वो तो चल ही रहे हैं। हर समय कार्यान्वित हैं। एक क्षण भी नहीं रुक रहे। अरे Lecture ही में क्या रखा है वो मेरी समझ में ही नहीं आया। सब शान्ति से बैठें। अच्छा भला म्यूज़िक चल रहा है, बीच में आप क्यों चिल्ला रहे हैं? हम लोगों को आदत ही पड़ गई है। ये आदतें छूटती नहीं। आराम से पाँच मिनट बैठकर के हम लोग किसी से कभी बात नहीं करते। कोई गर अपने यहाँ दोस्त आया तो कहेंगे चल भई तेरे को खाना खिलाऊं। बीवी घर के अन्दर खाना बनाएगी, आप बैठे हुए वहाँ पर Politics झाड़ेंगे। कुछ भी नहीं हो तो T.V. चला लेंगे। सब लोग T.V. देखो। अरे भई आपस में कुछ आदान–प्रदान करो, कुछ बातचीत करो।

आपने बुलाया है दोस्त को, आप T.V. लगा कर बैठे हैं? आपस में अनजाने ही आप चले जाते हैं। ये फिर दोस्ती नहीं होती, दोस्ती किससे है आपको?

कोई दोस्त ही नहीं है आपका। दोस्ती तो तब आती है जब आपस में कोई मज़ा उठाया जाए। दोस्ती उसे कहते हैं। आजकल दोस्ती का मतलब है कि Business आ गया, नहीं तो फिर ताश खेलो, ताश खेलने बैठ गए। तब तक भी ठीक है। फिर रुपया लगाया, काम खत्म। ताश में आप रुपया लगाइए, जिसने ताश में रुपया लगा लिया काम खत्म।

अब हमने ये कहा कि आप balance में रहिये। Balance में रहने का तरीका ये है कि आप ज़रा बैठिए, ज़रा देखिए, मजा देखिए। सवेरे सूरज उगता है, आकाश में देखिए कितने सुन्दर रंग आते हैं? यू ही चला जाता है। शाम को सूरज डूबता है इतने सुन्दर रंग उगते हैं, सब वैसे ही चला जाता है। कितने ही फूल खिलते हैं कितनी ही बहार आती हैं, कितने ही रंग बदलते हैं, ऐसे ही सारा काम चला जाता है। कितने ही लोग मिलते हैं सबसे मिलते हैं और बगैर मिले ही लोग चले जाते हैं बिल्कुल अजनबी। कभी जाना ही नहीं! कोई मर गया तो उसके लिए फूल भेज दिया, चलो हो गया काम खत्म। जहाँ सबसे ज्यादा रजोगुण हो गया है वहाँ तो ये हालत है कि कोई मरता है, बाप भी मरता है तो पेपर में आ जाता है कि भई मर गए। वो बाप पहले से ही पैसे दे जाते हैं कि गर मैं मर जाऊँगा तो मेरा एक सूट सिला देना नया, मेरे को पहना देना और वहाँ लिखा जाता है कि फलानी तारीख को आप देख लीजिए उनकी Body पर। वो दिखा देते हैं, देखो भई उनको सूट सिला दिया, अब ये मर गए। सब लोग आते हैं, उसमें एक–एक फूल चढ़ा दिया, चले गए अपने घर। तो ये वहाँ हालत है। कोई आदान प्रदान नहीं, कोई दोस्ती नहीं, कोई Friendship नहीं, कोई पहचान नहीं, कुछ नहीं। नानी के घर आप जाइए वहाँ पर नानी कहेंगी कि तू मेरे Telephone के दो पैसे दे, तब तू घर में पैर रखना। तुमने उस दिन टेलिफोन किया था, उसके पैसे नहीं दिए थे, पहले उसके दो पैसे दे, सारी चीज़ यही हो गई। इस तरह के artificial जीवन में भी imbalance आ जाता है क्योंकि artificiality के साथ रहना पड़ता है। किसी के घर जाइए साहब खाने पर बुलाते हैं, 8.00 बजे के गर 8.30 बज गए तो मार चीखना शुरू कर दिया। क्या अपने घर खाने को नहीं मिलता है क्या? देर हो गई तो कौन आफत आ गई? आ गए 8.30 आए चाहे 9.00 बजे आए। क्या हुआ? आओ बैठो आराम करो। Punctuality काहे के लिये चाहिए इतनी ज्यादा? जरूरत से ज्यादा Punctuality करने की जरूरत नहीं। हाँ Punctuality एक चीज़ में होनी चाहिए कि **अपने अन्दर जो परमात्मा का call है उसकी ओर Punctuality होनी चाहिए। इस वक्त परमात्मा ने हमें याद किया है फौरन ध्यान में चले जाएं। Vibrations आ रहें हैं फौरन ध्यान में चले जाएं। उस मामले में नहीं है Punctuality हमारे अन्दर।** इससे क्या होगा, Punctuality से हुआ क्या? यही suicide जिन देशों ने Punctuality बहुत रखी उन्होंने क्या प्राप्त किया? Punctuality से लोग आत्महत्या करते हैं, आत्महत्या का भी time लिखते हैं। हमारे यहाँ Punctuality पहले होती थी। इस तरह से कि हम पंचांग देखकर के Punctuality बनाते हैं। ये महूर्त अच्छा है, इस मुहूर्त पर ये कार्य करने से अच्छा है। उसमें तो कुछ तो आपने Consult किया Superior power को। परमात्मा से कुछ लेन–देन को

Consult किया, लेकिन ये जो बिल्कुल हमारी दैनंदिन इस तरह की Punctuality और इस तरह का हम लोगों का बिल्कुल यांत्रिक जीवन हो गया है इस जीवन से आप लोग ऊब जाएंगें, परेशान हो जाएंगे, घबरा जाएंगे। वही सवेरे उठना, वही दाढ़ी बनाना, वही मुँह धोना, वही दफ्तर जाना, वही आदतें। फिर वही घर पर आना, फिर वही बातें। आप लोग घबरा जाएंगें। घबराहट से फिर शुरू क्या होगा? वही चीज़ जो वहां हो रही है गांजा, LSD और उससे भी नहीं तो हमेशा बेहोश रहना। मतलब पलायनवाद, भागो, इस दुनिया में जीने की क्या ज़रूरत है? जब मनुष्य जीवन में बोर हो जाता है तभी वह पलायनवादी जीवन को खोजता है। मनुष्य बोर इसलिए होता है क्योंकि वो अपने को जानता नहीं। जब वह अपने को जानता है तो मस्ती चढ़ती है क्योंकि आप अपने अन्दर इस कदर सुन्दर, इतने व्यवस्थित, इतने मधुर हैं कि फिर ज़रूरत नहीं किसी की। आप अपने ही साथ बैठे रहते हैं, बड़ा मज़ा आता है। जब आप अकेले होते हैं तब सब से अच्छे रहते हैं, बड़ा मज़ा आता है। अपने ही जीवन को देखते रहते हैं, अपने ही अन्दर अपने स्वर्ग को देखते रहते हैं। हाँ जब दूसरों से मिलते हैं तो ये लगता है कि ये भी इस स्वर्ग में हमारे साथी हैं। जैसे दो शराबी बैठ जाते हैं तब उन्हें मज़ा आता है, अकेला कोई पीता नहीं। इस तरह का एक खुमार जिन्दगी भर चढ़ा रहता है। ऐसी बादशाहत गर पानी हो तो ऐसी बादशाहत अन्दर भी आनी चाहिए।

अपने अन्दर Balance लाना पड़ता है और ये धर्म से होता है। धर्म से मेरा मतलब कभी भी हिन्दु मुसलमान से नहीं होता है, आप समझ सकते हैं इस चीज़ को। कभी भी मैं बाह्य, इस तरह से छोटे–छोटे घरोंदों में विश्वास नहीं करती। न ही मैं उन भ्रमों में विश्वास करती हूँ जो बिल्कुल ही मनुष्यों ने बनाए हैं। ये बिल्कुल ही बेकार के हैं। इन सब चीज़ों को तोड़ फोड़कर के ही अपने सहजयोग पनपा है। लेकिन धर्म का मतलब ये है कि हमारे अन्दर जो Sustenance power है, हमारे अन्दर जो बसी हुई innate धर्म है, हमारे अन्दर एक–एक अंग–प्रत्यंग में जो बनाया गया है, उसको जागृत करना चाहिए। इसके बारे में मैंने आपसे कल बताया था कि अनेक धर्म हैं। उसमें से एक, आपको आश्चर्य होगा, कि सबसे बड़ा धर्म ये है कि सर्वधर्म समान हैं। गाँधीजी ने कहा था सर्वधर्म समानत्व मानें। उसका तत्व एक है ये समझ लेना चाहिए। पेड़ के अन्दर बहने वाली शक्ति हर जगह जाती है, मूल में जाती है, उसके तने में जाती है, उसके पत्तों में भी जाती है, उसके फूलों में जाती है और फिर वो वापिस लौटकर वापिस चली आती है। कहीं भी लिपटती नहीं। इसी तरह का निर्वाज्य, इसी तरह से अलग रहने वाला जो प्रेम है और जो शक्ति है, उस शक्ति में जो एक तत्व चारों तरफ घूम रहा है उसी प्रकार सारे ही धर्मों में एक ही तत्व घूम रहा है। और वो सीधा सादा सरल तत्व एक ही है कि जब धर्म की स्थापना हमारे अन्दर हो जाती है, जब हम किसी भी धर्म के तत्व से प्लावित हो जाते हैं, उस तत्व को जब हम अपने अन्दर पूरी तरह से स्थापित कर लेते हैं, तभी हमारा evolution हो सकता है। जैसे कि हिन्दु धर्म के लोगों को एक ही तत्व सीखना चाहिए कि सबके अन्दर एक ही आत्मा का वास है। और जाति–पाति आदि चीज़ें ये जन्म से नहीं होती, ये

कर्म से होती हैं। यही तत्व हिन्दु धर्म का है और इसमें दूसरा कोई सा भी तत्व नहीं खोजना है। गर इस तत्व को आपने पा लिया तो आप असली हिन्दु हो गए बाकी तो आप अहिन्दु हैं। चाहे वो अपने को मुसलमान कहलाएं चाहे वो अपने को ईसाई कहलाएं। एक ही शक्ति, हम लोग तो शक्ति के पुजारी हैं न, एक ही शक्ति सब के अन्दर बसती हैं और जिस कर्म में मनुष्य लीन होता है उसी कर्म से वो जाना जाए। माने जो ब्रह्म कर्म में लीन है वो ब्राह्मण है, जितने सहजयोगी हैं सब ब्राह्मण हैं। जो ब्रह्म में लीन है वो ब्राह्मण है। जो आनन्द को सत्ता में खोजता हैं वो क्षत्रिय है और जो आनन्द को पैसे में खोजता है वैश्य है, जो आनन्द को किसी की सेवा में खोजता है वो शूद्र है। आपको आश्चर्य होगा। हमारे अन्दर सेवा भाव का तो बड़ा भारी आदर्श है, सबकी सेवा करनी चाहिए, इसकी सेवा करो, उसकी सेवा करो। अब देखिए कि शूद्र क्यों कहा गया, ये सोचने की बात है। बड़े आश्चर्य की बात है कि कोई किसी की सेवा करे तो वो शूद्र क्यों है? ये सूक्ष्म बात है। इस सूक्ष्म बात को गर आप समझ लें तो आप हिन्दु धर्म को समझ लें। किसी की सेवा जो करे वो शूद्र है क्योंकि दूसरा कोई है ही नहीं। गर हम आपको ठीक करते हैं, आपकी मालिश करते हैं, आपका सिर ठीक करते हैं तो हम अपने को ही ठीक कर रहे हैं असल में, क्योंकि हमारा ही सिर पकड़ा हुआ है। आपका पकड़ा है तो , हमारे आप अंग प्रत्यंग हैं, तो हम गर इसे ठीक नहीं करेंगे, हमारे अंग प्रत्यंग को तो हमें ही

तकलीफ होती है। दूसरा कोई है ही नहीं। जिसने ये Idea ले ली कि मैं दूसरे की सेवा कर रही हूँ बहुत ही शूद्र Idea है। जिसने ये सोच लिया कि मैंने बड़े भारी अनाथालय बना लिए, मैं जाता हूँ गरीबों की सेवा करता हूँ! कौन हैं गरीब? आप हैं गरीब। मुझे गरीबी इसलिए अखरती है क्योंकि ये मेरा ही Part and Parcel है। अगर कोई इंसान संसार में गरीब है तो ये मेरे लिए insult है, मैं ही गरीब हूँ। इतनी बड़ी उच्च कल्पना को जब आप निम्न दिशा में देखते हैं इसी लिए ऐसा होता है। कोई भी बादशाह नहीं कहता कि मैं किसी की सेवा करता हूँ। वो देता है उससे बहता है, वो सेवा नहीं करता। सेवा में एक बहुत सूक्ष्म मूर्खतापूर्ण अंहकार है। किस पर उपकार आप करने जा रहे हैं? ये सब आपके अंग–प्रत्यंग में हैं और इसीलिए जब आप collective consciousness में आ जाते हैं तो आपको आश्चर्य होता है कि किसी की विशुद्धि चक्र में गर पकड़ है, गर कोई बीमार है तो आप भी पकड़ते हैं। आप कहते हैं माँ इसका विशुद्धि पकड़ रहा है, जल्दी छुड़ाओ। क्योंकि आप से रहा नहीं जाता। वो आपका अंग–प्रत्यंग बन जाता है, कहते हैं माँ देखो इसका पकड़ रहा है–मतलब आपका खुद पकड़ रहा है। देखिए आप कितने एकाकार हो जाते हैं। जैसे अब lecture की बात नहीं होती कि हाँ सब धर्म एक हैं। हिन्दु मुसलमान, पारसी, इसाई सब एक हैं, ये कहने की बात नहीं होती। ये होता ही है। कोई भी आदमी आपके सामने आए आप कहेंगे देखिए माँ इसका ये पकड़ रहा है। पकड़ आपकी उंगली रही है, आप कहते हैं इसका पकड़ रहा है। जैसे आपने अपनी उंगली ठीक कर ली, वो भी ठीक हो गए, आप भी ठीक हो गए। ये बड़ी सूक्ष्म सी बात है। इसकी सूक्ष्मता को वो ही पकड़ सकता है जिसमें सूक्ष्म गति है। इसलिए जो आदमी ऐसे कहता है कि मैं संसार में बड़ा उपकारी हूँ, मैं बड़ी मिठाइयाँ बाँटता हूँ और मैंने लंगर खोल रखे हैं, वो महामूर्ख है और शूद्र है। किसी पर भी उपकार करने का मनुष्य को कोई अधिकार नहीं है। उपकार तो एक ही करता है, परमात्मा। वो भी अपने ही ऊपर उपकार कर रहा है किसी दूसरे पर नहीं। जब वो अपने से नाराज़ हो जाता है तो तहस–नहस कर देता है। जब वो अपने से प्रसन्न होता है तो सब ठीक–ठाक कर देता है और जब किसी पर उपकार करना होता है तो वो सारे संसार को उबार देता है। क्योंकि संसार भी परमात्मा ही है, विराट के अंग प्रत्यंग में सारा संसार है। जैसे समझ लीजिए जैसे ये light है परमात्मा की, और उसके सामने अगर विराट का चित्र है तो इससे जो चैतन्य बाहर आ रहा है उसी में सारा संसार है। अब गर इस विराट में कोई तकलीफ है तो वहाँ दिखाई देगी। गर वहाँ कोई तकलीफ है तो यहाँ दिखाई देगी। उसको ठीक किए बगैर विराट ठीक नहीं होने वाला, और न उन्हें आराम मिलने वाला है। ये मैं आपसे सच कहती हूँ। आपको आश्चर्य होगा एक बार मेरे पैर में लग गई चोट, तो हमारे साथ एक डॉक्टर थे तो उन्होंने कहा कि माताजी मैं आपको Vibration देती हूँ। मैंने कहा अच्छा, आओ बेटे दे दो Vibration। जैसे ही उन्होंने मेरे पैर पर हाथ रखा वहाँ से धड़–धड़ Vibration आने लगे। मतलब जब कहीं चोट लग जाती है तो वहाँ से double Vibration आने लगती हैं। जब मैं थक जाती हूँ तो तिगुने treble Vibration आने लगती हैं। जब मैं बीमार हो जाती हूँ तो वहाँ से ऐसे

Vibration आएंगी जैसे आप सब लोग बीमार हों। समझ लीजिए बहुत से लोग दिल्ली शहर में बीमार हैं फ्लू से, तो मुझे भी फ्लू हो जाएगा और उसमें से जो Vibration निकलेंगी वो आपके फ्लू को ठीक करेंगी। वो जब निकल जाएंगे तो मैं भी ठीक हो जाऊंगी। अजीब सी चीज है ये! है ऐसी चीज, यही होता है। ये बड़ी सूक्ष्म चीज़ हैं इसे आप समझें, इसे आप देखें और इसका साक्षात्कार करें। आपमें से ऐसे भी लोग हैं यहाँ जिन्होंने ये देखा है। ऐसा ही होता है। जैसे कि समझ लीजिए अन्दर में antibodies तैयार होती हैं और वो बहने लग जाती हैं। इसलिए हमारे सन्तुलन में जो हमने पहले ही से कहा है सबसे बड़ी चीज़ है कि हमें धर्म के तत्व समझ लेने चाहिएं। सर्वधर्म समान हैं। बहुत ज़रूरी चीज है। कोई भी यहाँ पर कट्टर हो, उन्होंने बड़े बनाए, कट्टरपना के नमूने बना रखे हैं। हिन्दु धर्म में बड़ी अच्छाई एक ही है कि उन्होंने कोई एक मनुष्य जाति पर कोई लगाया नहीं कि ईसामसीह हैं या कोई मोहम्मद साहब ही हैं। ये एक अच्छाई हो गई, लेकिन उन्होंने सोचा कि भई जब इतने गए तो कोई दूसरा बनाओ, उन्होंने सोचा कि जितने ईसाई हैं वो पार हो गए या जितने मुसलमान हैं उनका ठीक हो गया तो अब उसका कैसे किया जाए? तो वो कहते है कि ठीक है, नहीं हो रहा तो दूसरा इलाज बनाएं। तो क्या इलाज उन्होंने बनाया, तो जाति पाति ही बना दी। आदमी ऐसा है, किसी चीज़ से बाज़ नहीं आता। ईसाई लोग कहेंगे कि बस ईसामसीह एक आए थे दुनिया में और कोई नहीं आए। तो ईसामसीह भी काफी उनके मुँह में बातें डाल दी। लेकिन ईसा मसीह ने खुद ही कहा था Those who are not against me are with me। अब who are those? मोहम्मद साहब ने भी कहा है खूब कहा है, आप अगर पढ़ें उसको। बहुत से पैगम्बर आए। इन लोगों ने लगा दिया कि अब इनके बाद कोई पैगम्बर ही नहीं आएगा।

क्राइस्ट ने कहा है कि I am the light I am the path, तो कहा कि ठीक है He is the light He is the path but who is the destination? Who is the beginning? भई light, है path है उसकी और भी तो चीज है, आगा–पीछा भी है उसका। कृष्ण ने कहा सर्व धर्माणाम् परित्यज्य मामेकम शरणम व्रज, तो लोग कहते हैं कि अब आप सब लोग हिन्दु हो जाइए। इसका मतलब ये है इतने जड़ हम लोग हैं। जिसने जो कहा उसको बड़ा ही जड़कर दिया। हर एक तत्व को जड़ करने में मनुष्य बहुत ही होशियार हो गया है। जितनी भी सूक्ष्मता है वो खोती गई हैं।

आपको कुण्डलिनी के बारे में मैंने कल सब चक्रों के बारे में बताया था। कुण्डलिनी क्या है, वो किस तरह से उठती है, कैसे चढ़ती है आदि। कुण्डलिनी सूक्ष्म शक्ति है। वास्तविक सदाशिव की शक्ति हमारे सिर पर सदा विराजमान रहती है और सदाशिव की शक्ति जो है यह ब्रह्मशक्ति है। अब सदाशिव कौन हैं उससे पहले की बात करें। तो ऐसा ही समझ लीजिए कि सदाशिव और शक्ति ये दोनों एक ही चीज़ हैं जैसे सूर्य और उसका प्रकाश। लेकिन creation जब करने का हुआ, अनेक बार हुआ creation, एक बार नहीं अनेक बार हुआ, तब तक सदाशिव और शक्ति अलग हट गए। दो अंग हो गए, शक्ति ये कार्य करती है, सदाशिव जो हैं वो साक्षी स्वरूप देखते हैं। शक्ति का कार्य है। शक्ति कार्यन्वित होती है। अब हम

शक्ति को समझते हैं, जैसे कि समझ लीजिए, आज यहाँ एक शक्ति आई है आपके सामने आप light देख रहे हैं। पर आप जानते हैं कि इसी light से आप गैस भी चला सकते हैं, इसी light से चाहे तो आप पंखा चला सकते हैं, इसी light से चाहे तो आप convert कर सकते हैं magnet में। पर आप उस शक्ति को नहीं समझ सकते जो शक्ति सारा कार्य करती है, सारा organize करती है, सब cooperation करती है, integrate करती है और जो प्यार करती है। आप कोई ऐसी शक्ति नहीं समझ सकते हैं जो प्यार करती है और प्यार में ही ये सारा कार्य है। प्यार से ही हरेक चीज़ जानती है और सारा कार्य करती है। ऐसी शक्ति आप नहीं समझ सकते। उसी शक्ति की मैं बात कर रही हूँ और वो शक्ति सारी ही शक्तियों का समूह है, उसी में electricity है, उसी में magnet है, उसी में light हैं, उसी में सारे elements हैं। अब आप यहाँ देखिए, ये जो हमने चित्र बनाया है विराट का, उसके सिर पर सदाशिव की शक्ति है और सदाशिव का पीठ भी है इसलिए उनकी वहाँ शक्ति है। इसके तीन अंग हो जाते हैं। आप देखिए ऊपर से, हमने बताया, वहाँ से जब छूटती है तो एक ऐसे आती है, एक ऐसे आती है, और एक बीच से आती है और एक जो सदाशिव स्वयं हैं, उनका असर हृदय में आता है। ये जो तीन शक्तियाँ हैं इनको महालक्ष्मी, महासरस्वती और महाकाली, तीन के नाम से कहा जाता है। अंग्रेजी में इस का कोई नाम नहीं है, मैं नहीं जानती अंग्रेजी में इसे क्या कहा जाता है। आप कहेंगे बहुत ही out of date चीज़ है। क्योंकि जो कुछ सनातन है वो अपने देश में out of date हो गया है और जो अंग्रेजों का है वो सबसे out of best हो गया है। जब ये सहजयोग हमारा इंग्लैण्ड और अमरीका से यहाँ आएगा तो लोग समझेंगे। हम लोगों को सीधे समझ में बात नहीं आती। जब English लोग सहजयोग आपको, मेरे पर लिख ही रहे हैं दो आदमी, एक English लिख रहे हैं एक फ्रैंच लिख रहे हैं, जब चिट्टियाँ ले के यहाँ आएंगे तब यहाँ के ladies और यहाँ के gentlemen जो हैं जो सिवाए tailcoat के बाकी सब अंग्रेज हैं, वो ladies and gentlemen, क्योंकि हिन्दुस्तानी यहाँ बहुत कम हैं। सभी वही लोग अभी तक हमारा guidance कर रहे हैं। इनका नाम महाकाली, महासरस्वती, महालक्ष्मी ऐसा है। लेकिन संस्कृत भाषा की विशेषता ये है कि एक–एक अक्षर मंत्र है। देवनागरी लिपि में एक–एक जो हम अक्षर –अ+क्षर, जो क्षर नहीं है, जितना हमने अ, आ, इ, ई जो कुछ है वो सारा ही कुण्डलिनी में घूमने वाला शब्द है। वहाँ वो शब्द निकलता है। मनन में हम लोगों ने इन शब्दों को सीखा है और तब लिखा है। अंग्रेज लोग कहते हैं, मगर जैसा बोलते हैं ऐसा हमने 'M' सीखा है। मगर फगर से हमारा कोई मतलब नहीं है। इन्होंने जानवरों से भाषा सीखी है, हमने मनुष्य के अन्दर बहने वाली कुण्डलिनी से भाषा सीखी है। जब कुण्डलिनी ऐसे घूमती है तो आवाज यूं करती है, श, श, श, यहाँ पर। ठीक है न? हर जगह उसके अलग–अलग शब्द हैं जैसे यहाँ 'हँ' 'क्षं' दो शब्द आते हैं। होते हैं, वो जो हम जिसे ओम् करके लिखते हैं, अ जैसे जो लिखते हैं, जो आप जिसे लिपि में ओम् लिखते हैं वो यहाँ आप देख सकते हैं कि यहाँ पर ओम् ही रहता है। जब कुण्डलिनी जागृत होती है तो यहाँ जब उस पर light पड़ती है तो ये जो चक्र है यहाँ पर ओम् ऐसा

ही लिखा होता है जैसा आप लिखते हैं। और जो अ आ इ ई, जो भी लिखा है आप लिखते हैं। देवनागरी में, संस्कृत भाषा में, वो भी हमारे अन्दर जब कुण्डलिनी वहाँ पर आघात करती है, जिस वक्त उसके निनाद होते हैं, तब वो निनाद और उसका लिखना भी घटित होता है। कितनी बारीक चीज़ है? क्या आपकी संस्कृति है और कहाँ से आई है! जो सारी मननों से उतरी हुई है, कोई हमने बाहर से सीखी हुई, Artificial चीज़ें नहीं हैं। लेकिन संस्कृत भाषा तो हमारे यहाँ पण्डितों, मूर्खो और गधों की हो गई जिनको कि, उसका उच्चारण भी नहीं आता। जो उसके तत्व को नहीं समझते! ये सब अंग्रेज हैं, शैली और कीट्स पढ़ते हैं। ये भाषा हमारे अन्दर उत्पन्न होती है और लिखित होती है। एक–एक अक्षर लिखने में अर्थ होता है। ओम् कैसे बना? इस तरह से ओम् की रचना होती है, बिल्कुल ओम् ही लिखा है। मैं ऐसे अंगुली घुमा रही हूँ, आपका भी आज्ञा घूम रहा है। इतनी scientific चीज़ है क्योंकि इसका सम्बन्ध Reality से है। इससे बढ़कर और कौन सी चीज़ scientific हो सकती है? जब तक आप संस्कृत में श्लोक नहीं कहते मेरे चक्र चलते ही नहीं हैं, आश्चर्य की बात है! पर आप गर अंग्रेजी में कहें तो चलते हैं। सिर्फ आज्ञा चक्र पर ईसा–मसीह की जो उन्होंने अपनी लिखी है क्योंकि यहाँ ईसा–मसीह का स्थान है उस पर उनका जो हिब्रू में उन्होंने लिखा हुआ है Lord's Prayer, वो चलता है, पर इंगलिश में भी कहें तो चल जाता है। पर यहां पर तो भी क्षमा स्वरूपपिणी, क्षमा ही शब्द कहना पड़ता हैं क्योंकि यहाँ 'क्ष' शब्द है इसलिए क्षमा कहना चाहिए। सब कहने पर भी क्षमा कहना पड़ता है। इतना हमारा संस्कृत भाषा का, कितनी, इसकी बुनियादें देखिए, कितनी गहरी और कितनी सूक्ष्म है? तो यह तीन, जो मैंने बताया, महाकाली, महासरस्वती, महालक्ष्मी तीन शक्तियाँ हमारे अन्दर में हैं, इनको ही 'ऐं' 'री' 'हीं' ऐसे कहते हैं क्योंकि इनका निनाद 'क्लीं', ऐसा होता है। र ये energy का शब्द है, जैसे राधा। र माने energy, ध माने धारने वाली। राधा, कृष्ण का अर्थ मैंने आपसे बताया था कृषि से आता है। अब 'कृ' शब्द कृष्ण कहते साथ विशुद्धि चक्र एक दम असर कर जाता है। कृष्ण ही कहना पड़ेगा क्योंकि कृष्ण जो हैं इसका यहीं से सम्बन्ध है। विशुद्धि चक्र से ही सम्बन्ध है तो कृष्ण ही उनका नाम हो सकता है। कितनी Scientific चीज़ है, ये बताइए और कितनी सूक्ष्म चीज़ है? लेकिन सहजयोग हमारा प्रेम का मार्ग है और प्रेम में इतनी गहराई नहीं देखने की ज़रूरत। एक ही अक्षर प्रेम का पढ़े सो पण्डित होए। ये हमारा सहजयोग है। कोई जरूरत नहीं आप बड़े पण्डित होइए, पढ़ि पढ़ि पण्डित मूर्ख भए, जो पण्डित यहाँ आए उनसे तो भगवान बचाए, कहने लगे कि साहब हमने गुरु ग्रंथ साहब सारा रटा हुआ हैं। मैंने कहा अच्छा क्या है? वो ही जो आप कहते हैं वो ही कहते हैं कि मन में ही खोजो। मैंने कहा तुमने तो रट रखा है न, तुने तो खोजा नहीं न? खोजो? खोजना चाहिए। उसी प्रकार हो गया कि मन्त्रं अमन्त्रं अक्षरं नास्ति, नास्ति मूलं अंशनम्, अयोग्यः पुरुषो नास्ति, योजकः सः दुर्लभम्। वैसे तो हरेक चीज़ में मन्त्र है परन्तु मन्त्र की योजना आनी चाहिए। तो कोई कोई भूत लोग यहाँ आए हैं राक्षस लोग वो 'ऐं' 'रीं' क्लीं का आपको मन्त्र दे देंगे, ओम् बोलो, क्लीं बोलो। पूछो भई ये है क्या? कुछ नहीं बता पाएंगे। अच्छा बता

भी दिया थोड़ा बहुत, कहीं पढ़ा–वढ़ा होगा, अब आपका चक्र कौन सा पकड़ा हुआ है? आपको 'ऐं' 'रीं' क्लीं का उन्होंने मन्त्र दे दिया, कोई मन्त्र विद्या का बड़ा भारी शास्त्र है कि कौनसा आपका चक्र पकड़ा हुआ है? गर आपकी left side पकड़ी हुई है तो आपको Left Side का मन्त्र देना चाहिए और आपकी right side पकड़ी हुई है तो right side का देना चाहिए, बीच की पकड़ी हुई है तो बीच का देना चाहिए। अब ये जो तीन आपको यहाँ दिखाई दे रही हैं उसमें से left side महाकाली का स्थान है। ये हमारे तमोगुण को पालती है। तमोगुण हमारे अन्दर है। इसे चन्द्रनाड़ी भी कहते हैं।

अब देखिए कि पृथ्वी की रचना भगवती ने कैसे की? पहले सूर्य से कुछ हिस्सा भगवती ने निकाल लिया। उसके बाद उस हिस्से को बहुत दूर ले गई, सूर्य से बहुत दूर ले गई जिससे वो एक दम ठण्डा हो गया, बर्फ की तरह। फिर उसको धीरे–धीरे सूर्य के पास लाई। उससे वो पिघलने लग गया, उसमें पानी का प्रवाह शुरु हो गया। उसके बाद वो उसे फिर से बहुत दूर ले गई, फिर नजदीक लाकर ऐसा adjust कर दिया कि जिससे वहाँ सृष्टि हो सके, जिससे वहाँ जीव–धारणा हो सके, ये सारा ब्रह्माण्ड जो है Spiral में Move करता है Spiral में। मैं आपसे बता रही हूँ शायद सौ साल बाद लोग कहेंगे बहुत सी बातें जो अभी अभी हमने कहीं थीं वो भी अब लोग कहने लग गए हैं। उस Spiral के बराबर उस Spiral के Movement से ये होता है कि व्यक्ति कभी सूर्य की ओर ज्यादा होता है कभी चन्द्र की ओर ज्यादा होता है। तो सूर्य नाड़ी और चन्द्र नाड़ी हमारे अन्दर दो नाड़ियाँ हैं। Right side में जो नाड़ी है उसे सूर्य नाड़ी कहते हैं और चन्द्र नाड़ी को जो कि हमारे अन्दर बसती है उसे ईड़ा नाड़ी कहते हैं। इसमें भी बड़े घोटाले हैं, मैं देखती हूँ कि इतना confusion है, इतना confusion है। Right side में जो नाड़ी है उसे पिंगला नाड़ी कहते हैं, right side की नाड़ी जो है सूर्य नाड़ी है, left side की नाड़ी जो है चन्द्र नाड़ी है। इन दोनों का जब संतुलन आप साधते हैं तब आप बीचों–बीच आते हैं। एक extreme में कोई गए तो पैण्डुलम जैसे एक जगह गए तो दूसरी जगह को जाना शुरु होता है। जैसे कि मैंने बताया था जहाँ रजोगुण बहुत ज्यादा हो गया है विदेशों में तो उन्होंने तमोगुण में आने की शुरुआत की। जब बहुत ज्यादा बढ़ गए तो suicide शुरु हो गए और नहीं तो शराब पीना, गांजा और इस तरह की चीजें जिससे balance आ जाए। एक पैण्डुलम इधर गया तो उधर से उधर दौड़ गया। उधर से उधर बीचों बीच संतुलन है, एकदम मध्य में और उसके बीच में Gap है, यही void है, इसे void कहते हैं। जेन system में अगर आप जेन पढ़ें तो पूरा सहजयोग है, कबीर पढ़ें तो पूरा सहजयोग है, नानक पढ़ें तो पूरा सहजयोग है, कृष्ण पढ़िये तो पूरा सहजयोग है, राम पढ़िए तो पूरा सहजयोग है। क्राइस्ट पढ़ें तो पूरा सहजयोग है, कुरान पढ़ें तो पूरा सहजयोग है। सब सहजयोग है। कहने का ढंग शायद अलग हो जाए पर मज़ा आएगा वही। ये जो बीच का void है, ये भवसागर है और इसमें उतने के लिए कोई सीढ़ी नहीं है समझ लीजिए कि दो ऐसी सीढ़ियाँ लगी हुई हैं लेकिन बीच वाली सीढ़ी आधी लटक रही है और उस पर चढ़ने का जो मार्ग है वो नीचे है कुण्डलिनी। इस कुण्डलिनी को, इस bridge को, इस gap को भरना होता है,

बहुत सीधा–सरल है, कोई बहुत दूर नहीं। अब ये कुण्डलिनी आपकी माँ हैं, जन्म–जन्म आपके साथ पैदा हुई, आप ही में स्थित रहती है। मृत्यु के बाद भी जीवात्मा के साथ ऊपर में आत्मा और कुण्डलिनी दोनों साथ ही साथ रहते हैं। ये हर समय आपमें स्थित रहती हैं और यही आपके पास subconscious का पूरा जोखा है। कुण्डलिनी जो है ये गौरी है यानि ये महाकाली का एक part है। महाकाली का एक part है। बीच की शक्ति जिसे हम सृजनात्मक शक्ति या उत्क्रान्ति की शक्ति कहते हैं या जिसे हम evolutionary शक्ति कहते हैं महालक्ष्मी की शक्ति कहते हैं, वो ये शक्ति नहीं है। ये आपके subconscious की शक्ति है जो अब तक आपको past हुआ, आपका कर्म हुआ, आपका ये हुआ, वो समझ–लेना चाहिए। तो कुण्डलिनी वो चीज़ है, उसका हिस्सा है। जो void है void के अन्दर में सरस्वती का कार्य है। क्योंकि मैंने आपसे बताया था बीच का जो नाभि चक्र है उसमें से एक कमल का फूल निकलकर के, उसमें बैठा हुआ ब्रह्मदेव सारी चीज़, रचनात्मक कार्य करता है। इसलिए इस void के अन्दर में रचनात्मक कार्य की शक्ति है। आप जानते हैं, ये है। ये रचनात्मक कार्य पाँच element के बारे में, उसी से मन भी तैयार होता हैं। मन भी इसी का एक हिस्सा है। Existence की शक्ति है और वो कार्यान्वित रहने की रचानात्मक शक्ति है। जब वो कार्य करती है तो इस तरह से, एक समझ लीजिए, कि byproduct होता है किसी factory में, किसी प्रकार के दो byproduct निकलते हैं, एक byproduct जो left side से ऊपर चलता है वो इस side में आ जाता है right side में। इसे Super Ego कहते हैं और जो right side के कार्य करने से होता है वो Ego होता है। जो लोग right side में कार्य करते हैं, जिन्हें रजोगुणी कहते हैं वो ego-oriented होते हैं, अपने Ego से कार्य करते हैं। और जो left side होता है वो Super Ego होता है, बहुत से आपमें psychologist होंगे तो आपको समझा देंगे। जैसे कि एक बच्चा है माँ की गोद में दूध पी रहा है आराम से। आनन्द में है। उस वक्त उसकी माँ उसको हटाती है, तो उसका ego जागृत होता है, वो कहता है कि ये क्या कर दिया? माने उसको गुस्सा चढ़ता है। उसकी माँ उसको डाँटती है। ऐसा नहीं करना, super ego बनता है। कोई करने की इच्छा होना ego से होती है और जब उस पर दबाव आता है वो शक्ति super ego की होती है। हमारे अन्दर इस प्रकार दो संस्थाएं बनती हैं Ego और Super Ego। एक चीज़ से तो हम कहते हैं इसको हम करके दिखाएंगे और दूसरी चीज़ से हम कहते हैं कि नहीं भई ये नहीं करो। ये हमारे बाप कह गए थे, इसमें फायदा नहीं होने वाला। अब ज़रूरी नहीं कि बाप अच्छा ही कह गए हैं, कभी अच्छा भी कहते हैं कभी कभी बुरा भी कह जाते हैं। इस तरह की दो शक्तियाँ हमारे अन्दर काम करती हैं या ऐसा समझ लीजिए कि एक से हमारी इच्छा शक्ति और दूसरी से हमारी रचना शक्ति। रचना शक्ति और इच्छा शक्ति गर बराबर आ जाए या जिसे कहिए ego और super ego जब बराबर आ जाए तो आप देख सकते हैं कि कुण्डलिनी का उठना कितना आसान हो जाएगा क्योंकि सर का बोझा जो है वो एक जैसा हो जाएगा बीच में से कुण्डलिनी आसानी से निकल जाएगी। इसीलिए संतुलन की बहुत जरूरत है।

आज मैं संतुलन पर ही बोल रही हूँ, बार बार गुणगान करके संतुलन पर आती हूँ। गर आपके अन्दर संतुलन नहीं है तो कुण्डलिनी जागृत होकर के ब्रह्मरन्ध्र से नहीं निकलती। संतुलन का establish होना बहुत जरूरी है। और उस संतुलन के लिए ही मैं आप लोगों से कहती हूँ कि आप left से right को जाएं क्योंकि ego यहाँ पर बढ़ गया है। पूरा ego है। यहाँ का balloon ego ने दबा दिया है, super ego को नीचे। तो आपसे मैं कहती हूँ कि आप इस तरह से ऊपर उठाइए, super ego उठेगा और ego नीचे आ जाएगा। फिर आप उठाइए फिर आप करिए, धीरे–धीरे करते करते ये हो जाएगा कि बीचों बीच आ जाएगा। उसके लिए भी मेरे ओर हाथ करना पड़ेगा नहीं तो आपके हाथ से थोड़े ही कुछ होने वाला है। जैसे बीच में आ जाएगा तो कुण्डलिनी खट से उठकर ऊपर चली जाएगी। कुण्डलिनी सब जानती है, समझती है आपका सब। उसको Past मालूम है। आपने जो गलतियाँ करीं, जो कुछ भी आपने अपने साथ ज्यादतियाँ करीं, जैसे आप किसी गुरु के पास गए, कुण्डलिनी आपकी जानती है। उठेगी ही नहीं frozen कुण्डलिनी। इसीलिए आपने देखा होगा कि किसी ने बताया मेरे गुरु थे तो मैं सर पकड़ कर बैठ जाती हूँ कि गई कुण्डलिनी काम से, अब तो हाथ जोड़ो इनको भैया। क्या करें? अब लोगों को ये लगता है कि माताजी क्यों गुरुओं को बुरा कहते हैं? क्योंकि कुण्डलिनी ही उन्होंने freeze कर दी तुम्हारी तो मैं क्या करूंगी? और दूसरा ये है कि आपका क्या होगा? कितना सर्वनाश है? आप ही सोचो कि आपका कोई उद्धार नहीं, आप पार नहीं कर सकते, जन्म जन्मांतर तक भी नहीं हो सकते। और ये कहने पर भी लोग कहते हैं, नहीं हमारे गुरु बहुत अच्छे हैं। तो सोचते हैं क्या? एकदम भूत–बाधा है, क्या? कितना भी कोई परेशान करे, कुछ भी तकलीफें हों, सारा शरीर भी टूट जाए, Heart से भी मर जाएं, तो भी माँ, हमारे गुरु बड़े अच्छे हैं। इसका कारण क्या है? इसका कारण एक ही सीधा सरल बैठता हैं कि कोई न कोई आपके ऊपर पकड़ है। आप सोचना ही नहीं चाहते कि असलियत क्या है? अब ego किसी आदमी का बहुत ज़बरदस्त बढ़ा हुआ है, उसके अनेक तरीके हैं आपसे मैंने पहले ही बताया है। Ego की बीमारी ऐसी है कि वो बीमारी पता ही नहीं चलती है। गर आपका तमोगुण super ego ज़्यादा है, तो उसका बदन टूटेगा, कि माँ मेरा यहाँ दुखता है, मेरे पैर पकड़ गए, पता नहीं कोई कभी मेरे गर्दन में बैठ गया है, पता चलता है। पर ego तो अपने को ही अपने ऊपर बिठाया होता है, घोड़े पर चलता है। उसके पास आप जाइए तो मेरे को ही lecture देना शुरु कर देता है। अभी गई थी मैं कोई मंत्रियों के पास में, उन्होंने मेरे को ही lecture देना शुरु कर दिया, इधर आप लोगों का कोई programme होने वाला था, उसी में मैं lecture सुनती रही, मैंने कहा वाह भई वाह! रोज़ lecture देते हैं अभी इन्हें मैं ही चाहिए थी lecture सुनाने के लिए? अच्छा भई सुना लो। तुम्हारा भी हो जाएगा, इधर तुम लोग यहाँ बैठे रह गए मैं वहाँ ही बैठे रह गई। इसलिए ego ऐसी चीज़ है जिसको अहंकार एक बार चढ़ जाए उसको समझाना बहुत मुश्किल होता है। सूक्ष्म अंहकार भी बहुत होता है, जैसे किसी ने कुछ पढ़ लिख लिया तो मेरा तो इसमें विश्वास ही नहीं कि माताजी कुण्डलिनी उठाती है। अब साहब

आपका विश्वास ही नहीं रहा। मैं तो विश्वास ही नहीं कर सकता, आपका विश्वास किसी चीज़ पर हैं? आपने क्या जाना, आपने क्या देखा? आप आइए देखिए। आपका विश्वास नहीं है या है इससे क्या फर्क पड़ने वाला है भगवान को? मुझे पूर्ण विश्वास भगवान पर है, माने आप कहाँ के अफलातून हो गए? सृष्टि क्या अपने बनाई थी, या आपके बाप ने बनाई थी? इस पेड़ के नीचे जो बैठे हुए हो क्या आपने बनाया? पूर्ण विश्वास परमात्मा पर है, इस तरह से जो मनुष्य बातें करता है वो अति है। जिसने सारी सृष्टि की रचना की, जिसने सारा संसार बनाया, आपको और आपके बच्चों को बनाया, जो चीज़ संसार में जगमगा रही है, ये सब जिसकी कृपा दृष्टि से हो रहा है उस पर आप विश्वास कर रहे हैं, बहुत आप उपकार करते है! परमात्मा पर आपका विश्वास ही नहीं है तो आपसे बढ़कर अक्लमंद कौन होगा? ये सब पागलों जैसी बाते हैं। मैं जब पैदा हुई तो मेरे को लगा कि मैं कौन से पागलखाने में आ गई? फिर ये कि हाँ मैं तो सब कुछ जानता हूँ माताजी, हाँ मैंने पढ़ा था, सारी माँ ये किताब पढ़ के आया हूँ उसमें। अब किताब कहीं भी, किसी भी छापे खाने में आप छपा दीजिए, छप जाती है। कोई भी छाप सकता है, जिसका मन हो छाप दे और भगवान के ऊपर कोई छापे तो उसके लिए कोई नियम नहीं है। कोई कायदा कानून नहीं कि कोई उसको पकड़े कि भई तूने इसको क्यों छापा? और कोई कहे कि भगवान का ये हाल है तो हाँ भई है। वो कहे कि भगवान का वो हाल है तो है। उसका कोई ऐसा कहीं कायदा है, कोई कानून है जहाँ आदमी हाथ पकड़े कि खबरदार भगवान पर बोलने वाले तुम कौन होते हो? हिटलर से लेकर के नेपोलियन से लेकर के सबने भगवान पर भाषण झाड़े, किसी ने छोड़े थोड़े ही। सब अपने को सोचते हैं कि उनको अधिकार है भगवान पर lecture देने का। इनसे पूछिए, तुमको क्या मालूम हैं भगवान के बारे में, तुम क्यों बोलते हो? मैंने इतनी किताबें लिख डालीं, मैंने फलाना पढ़ डाला, ढिकाना, मैं अमरीका गया था, मैंने इतने lecture दिए, मैंने इतने lecture पढ़ डाले, एक एक एक एक इस तरह से एक तरह का बड़ा सूक्ष्म aggression है। आप इसको समझ नहीं पाए। ये मनुष्य के Intelect पर एक aggression है, आपको mental feast देते हैं। भगवान की बातें करने लगे, बातें सुनने लगे आप, बड़े अच्छे बोलते हैं साहब। एक साहब हैं क्या भाषण देते हैं, बस सुनते ही रहिए आप पता ही नहीं चलता है time का! अच्छा मनोरंजन हो रहा है। भगवान पे बोलने का हरेक को अधिकार नहीं, गीता पर बोलने का तो किसी को अधिकार नहीं, गीता के lecture होते हैं! माताजी मैं गीता के lecture में ज़रा जाता हूँ और आपका आज्ञा चक्र पकड़ा हुआ है। तो मैं गीता के lecture में नहीं जाऊं? बेटा तुमको जो गीता समझा रहा है क्या वो पार है? पार हुए बगैर आपको धर्म पर बोलने का या गीता पर बोलने का कोई अधिकार नहीं। जो मनुष्य पार हुए बगैर कोई सा भी lecture देता है वो ऐसा ही जैसे एक अंधा आदमी आपको रास्ता बता रहा है। लेकिन धर्म में अन्धा कौन है, और देखता कौन है ये जानने का भी कोई मार्ग नहीं। जो आदमी विरह में बोलता है उसका तो सुनना भी नहीं चाहिए। विरह के गीत गाए उसको क्या सुनना? हम भी विरह में हैं, वो भी विरह में है, इसलिए मज़ा आता है। जैसे सूरदास

जी हैं, सूरदास जी विरह में रोते थे तो सबको अच्छा लगता है। ये भी अन्धे, हम भी अन्धे, सब अन्धे गा रहे हैं! बल्लभाचार्य जी के पास गए, बल्लभाचार्य कहने लगे काहे घिघियावत हो भाई? जो आदमी मिलन में बैठता है उसको समझ ही नहीं आता कि विरह की बात क्यों गा रहे हो। सबको अच्छा लगता है ऐसा भजन कि भगवान कब मिलेंगे? किसी किसी को ऐसा बेकार का झूठा नाटक भी अच्छा लगता है। बड़ी विरह अवस्था में सब देवदास बने बैठे हैं। देवदास काटे घास, मैं ये कहती हूँ। इतनी कविता रुदन की और इतना विरह। हे भगवान! इनको कब बुद्धि आएगी? विरह का मज़ा बड़ा आता है आदमी को। इसके काव्य होते हैं लेकिन जो मिला हुआ है, मिलन में बैठा है, वो विरह के गीत कैसे गाएगा? एक सीधा हिसाब होता है, जो मिलन में बैठा है वो विरह की बात कैसे कहेगा? वो कहेगा I am the light, I am the path, वो कहेगा कि सर्व धर्माणाम परित्यज्य मामेकम् शरणम् व्रज। उसके अन्दर authority होएगी। वो किसी के बाप से डरने वाला नहीं, किसी के सामने घिघियाने वाला नहीं। आना हो तो आओ नहीं तो जाओ। उसकी पहचान कबीर है उसका सबने मज़ाक उड़ाया सिधुक्कड़ी भाषा करते हैं! हमारे यहाँ हिन्दी भाषी लोग उसका बड़ा मज़ाक बनाते हैं। उनके पांव के धूल के बराबर भी इनमें से कोई हो तो मुझे बता दीजिए। मार्कण्डेय जी के पीछे पड़ गए। उनमें ये ये दोष है, उनके वाङमय में ये दोष है। तो इनके लिए उमरखैय्याम बहुत अच्छे हैं क्योंकि वो पिनक में अपने लिखते रहते हैं। ये लोग सब पिनक में ही लिखते हैं, अधिकतर गज़लें जो हैं वो मैंने देखा है कि पिनक में ही लिखी हुई हैं। मुझे तो घिन चढ़ जाती है जिस तरह से विरह में लोग रोने लग जाते हैं गज़लों में बैठकर। ये कोई मदद की लोगों की बात नहीं। ये सब तमोगुण के लक्षण हैं। हर समय विरह गाना, रोते रहना, विरह की बात करना। मिलन की बात करो, मिलन में आओ और जब समय आ गया तो हमें विश्वास ही नहीं कि मिलन भी हो सकता है। तो रोते बैठेंगे। पहले कहेंगे कि आओ, आओ आओ, जब आकर खड़े हुए तो कहते हैं हमें विश्वास ही नहीं होता कि वो सच्चा है! ये दुनिया है इसे क्या कहा जाए? अरे पहले बुलाया क्यों, जब बुलाया है, जब आ गए तो बोलते हैं कि हमें विश्वास ही नहीं होता है कि आप आ गए! अभी हमें रोने दीजिए, अभी रोने से फुर्सत नहीं उनको। जब इनका रोना खत्म होगा तब तक यहाँ से पसार भी हो जाएगा। घण्टों बजाते रहेंगे और पुकारते रहेंगे कि प्रभु तुम आओ, प्रभु तुम आओ दर्शन दो, दर्शन दो हमको, दर्शन दो और दर्शन लेकर करने का क्या है? कुछ बनना चाहिए, होना चाहिए, घटित होना चाहिए। ये तो होने की बात है, Becoming की बात है, हवाई बातें नहीं। लेकिन मनुष्य बड़ा संतोष में रहता है क्योंकि वो superficial है न। उसको इसी में संतोष रहता है कि कोई इनको रिझाए रखे। बैठे अपने भजन गा रहे हैं, घण्टों गा रहे हैं, घटही खोजो भाई, घटही खोजो भाई, घटही खोजो भाई। घटही खोजो भाई, खोजने वाले कौन हैं? किसको lecture दे रहे हो भई? वो तो उन्होंने बताया जो खोज चुके, अब तुम किसको lecture दे रहे हो? वो तो उनको बताया था कि तुम घट को खोजो। उनसे कहा था कि सरदर्द की ये दवा ले लेना, अब तुम prescription ही रट रहे हो सुबह से शाम तक! इससे क्या लाभ

होने वाला है? इससे किसका भला हुआ है? ऐसे भजन गाने से एक भी आदमी को आपने देखा है कि लाभ हुआ? अन्त में वही सिर पैर ऊपर करके नाटक करके चिल्ला रहे हैं सुबह से शाम तक। Cancer of the Throat हो जाएगा। अब समय ये आ गया है कि ऐसी बेकूफियाँ ज्यादा न करो, नहीं तो Throat Cancer हो जाएगा। बेकार में गाते फिरेंगे तो Cancer of the Throat हो जाएगा। किसने कहा इतने द्राविड़ी प्राणायाम करने के लिए? कि गला फाड़ फाड़ कर गाओ? अरे भई एक बार जब कह दिया हो गया, आ जाओ, आ ही जाएंगे, इतना गला फाड़ने की और अपना विशुद्धि चक्र इतना सत्यानाश करने की क्या ज़रूरत पड़ी हुई है? मेरी समझ में नहीं आता। यहाँ पर आए, माताजी हम ये मंत्र कहते थे। कितने बार? रोज़ का कम से कम हो जाता था 108 बार। भई किसने कहा 108 बार कहने के लिए? एक बार कह दिया हाथ जोड़ के, श्री राम तुम्हारे शरणागत हैं बस हो गया। अब वो कोई आपका नौकर है जो आप सुबह से शाम तक आप उसको Order दे रहे हैं? अब पूरा समय आप किसी को इस तरह करें तो भगवान वहाँ से उठ ही जाएंगे। साहब सिर दर्द हो जाता है मुझे। अब तीन से चौथी बार कोई माताजी कहते हैं तो मैं कहती हूँ भई क्या चाहिए आपको? आप ही सोचिए भगवान की position में जाकर, क्या आपको कोई 108 मर्तबा पूरा समय पुकारता रहे तो कहेंगे भई चुप भी कर। हमारी grand daughter थी हम गए थे वहाँ बिहार में, Realized Soul है, बड़ी मज़ेदार जीव है। होगी कोई पाँच छः साल की, कहने लगी नानी बस यहाँ तो बहुत गड़ बड़ हो गया, मन्दिर में ये सब लोग रात–दिन गाते रहते हैं, हे राम, हे राम तो वहाँ से भगवान जी तो कबके भाग गए, ये तो मुझे पता है लेकिन अब मैं भी भाग जाऊंगी। कहने लगी कि इन्हें सुन–सुन के तो मेरे कान दुख गए, अब तुम भी भाग जाना यहाँ से। ऐसे बेकार लोग हैं। एक छोटा सा बच्चा समझता है। वो गए थे लद्दाख उनके पिताजी तो वहाँ एक लामा साहब बैठे हुए थे। देखिए एक छोटा सा बच्चा छः साल का, अब सब लोग जाकर, सब लोग जा–जाकर लामा साहब के पैर छू रहे थे। अब ये तो पार हैं, इनको मालूम है कौन पार है, देखा उनकी Mother ने भी पैर छुए, पिता ने भी पैर छुए, तो उससे रहा नहीं गया। फिर वो ही शान आ गई उनकी। सामने जाकर उनके खड़ी हो गई, कहने लगी ये क्या सिर मुंडा के, चोगा पहन के सबसे पैर छुआ रहे हो? पार तो हो नहीं। सबकी हालत खराब, माँ बाप की। ये क्या कर दिया बच्चे ने? ठीक तो कह रही हूँ, ये क्यों पैर छुआ रहा है? तुम लोग इनके पैर क्यों छूते हो? ये तो पार नहीं है बिल्कुल भी। इन्होंने सिर्फ सिर मुंडा लिए हैं और चोगा पहन लिया है और ऐसा मुँह बना कर बैठे हैं। उनको ऐसा मुँह भी दिखा दिया। उनको किसी का डर नहीं। सरमुंडाने से अगर भगवान मिलते हैं तो जो ये भेड़–बकरियाँ होती हैं ये पहले भगवान के पास पहुँचती। कबीर का Sense of humour जो था वो कमाल का था। और ये रोने की हद् इतनी पहुँच गई है इन लोगों की कि अब वो हसन हुसैन मर गए तो उसके लिए चिल्ला रहे हैं। एक आफत मचाए हुए हैं, साहब ऐसी रोनी सूरत देख के जी घबराता है। कोई आने वाला हो भगवान तो वो भी भाग जाए। ये कहाँ रोने पीटने वाले लोग? इतने तो जानवर भी नहीं रोते, कोई नहीं रोता इतना। ये तो

मनुष्य का एक अजीब तरीका है, रोने लग गए तो रोने ही लग जाए। अच्छा वो हुआ, उससे भी जब चैन नहीं आया तो जिस दिन भगवान का जन्म होएगा उसी दिन उपवास करेंगे। इससे बढ़कर और किसी का क्या अपमान करेंगे। इससे बढ़कर और किसी का क्या अपमान होएगा? आप समझ लीजिए आपके घर में कोई आदमी आया, कहने लगा मैं तो आज खाना नहीं खा रहा हूँ। वो कहेगा भई मैं जा रहा हूँ अपने घर। ग़र किसी आदमी को आपको भगाना हो घर से तो आप कह दें 'मैं आज खाना नहीं खा रहा हूँ।' उसने कहा अच्छा मैं जाता हूँ होटल, सीधा हिसाब। आपके घर में कृष्ण का जन्म हुआ राम का जन्म हुआ तो भी उपवास करो। ये कौन सा तरीका है? इससे बढ़कर अपमान का और कौन सा तरीका है? कल मैं आपके घर में आऊं, समझ लीजिए श्रीमाताजी आपके घर में आते हैं, मेरा तो उपवास है, तो भैया मेरे को काहे को बुलाया? जब कोई ऐसे आते हैं, ऐसे जन्म होते हैं बड़े तो उस वक्त जश्न मनाना चाहिए, खुशियाँ मनानी चाहिएं, सबको खाना खिलाना चाहिए। गणेश जी को मोदक पसंद हैं तो मोदक बाँटिए। उस दिन उपवास करेंगे! और जिस दिन नरक चतुर्दशी है, उस दिन सवेरे चार बजे उठकर नहा करके खाने को बैठेंगे। बताइए सब उल्टी चीज़ें समझ में नहीं आती। ये किसने सिखाई? ये ब्राह्मणों ने बेवकूफ बनाया है या तो ये राक्षसों के धंधे हैं। मेरी तो ये समझ में नहीं आता है कि ये उल्टी बातें कहाँ से आ गईं अपने यू.पी. में? और North में तो और भी चौपट हाल है, इतना चौपट हाल है कि कोई पढ़ा लिखा तो है नहीं यहाँ संस्कृत वंस्कृत। किसी को समझ तो है नहीं, जो भी ब्राह्मण कहे चढ़ा दो, चलो ठीक है जितनी श्रद्धा हो ब्राह्मण को दे दो। ब्राह्मणों की तो यहाँ agency हुई। सबसे तो कमाल ये है कि जब मेरी शादी हुई, जब मेरी शादी हुई यू.पी. में तो हम घर पर गए, तो आपको आश्चर्य होगा, कि शादी में श्राद्धयोग गा रहे थे! वही मंत्र गा रहे थे! मारे हँसी के मेरी तो हालत खराब और पेट में बल पड़ गया। अब जाऊं तो जाऊं कहाँ? मैं घर की बहू, नई नई, मारे हँसते हँसते मैंने कहा भई मुझे तो नींद आ रही है। तो उन्होंने कहा इतने शुभ मुहूर्त पर तुम कहाँ सोने जा रही हो? मैंने कहा मैं करूं क्या? क्यों हँसी आ रही है? मैं उनको कहूँ तो कहूँ कैसे कि सब उनको थोड़े बहुत वही पितृ पक्ष के थोड़े बहुत मन्त्र मालूम थे, वही बोले जा रहे हैं। मैं कहूँ कि ये क्या तमाशा है कि इनको तो कोई श्लोक भी मालूम नहीं? ब्राह्मण हैं और हमारे घर में खानदानी चले आ रहे हैं? तो मैंने कहा इनसे कौन बात करे अब? इन्होंने खानदानी ऐसे ही शादियाँ लगाई होंगी, उनको बरतन भी मिले हुए हैं, उनको गैया भी मिल जाती है। तो उनके घर में गैया ही गैया हो गई हैं और इस तरह के धर्म की चीज़ें बनी हैं इस तरह से rituals बने हैं! हम लोग क्या सोचते हैं कि पीछा छुड़ाओ। श्राद्ध हुआ तो उसने कहा कि भई देखो एक गैया देना और एक कपड़ा देना हमें और एक हमारी ब्राह्मणी को साड़ी दे दो, तुम्हारी माँ पहनेगी। आपने सोचा, ठीक है इससे पीछा छुड़ाओ, गैया तो बहुत मुश्किल है इसे साड़ी ही दे दो। कोई ये नहीं सोचता है कि हम जो कर रहे हैं उसमें हमारा क्या हृदय है? क्या करना है, क्या देना है, धर्म में क्या चीज़ है उसको जानना चाहिए। किस तरह की बात है? कोई इस तरह से बात को सोचता नहीं है

और इसीलिए ये हमारे अन्दर उसका संतुलन नहीं बैठता। बस काम चालू, काम चालू, चलते रहो, चलाते रहो किसी तरह से। कोई हाँ हाँ भई कैसे हो अच्छे हो, बैठो, हाँ ठीक ठीक है। उसके बाद वो गए, मालूम पड़ा बड़ा बदमाश है ये। इसने फलाने के घर चोरी की थी, उसने इतना रुपया मारा था। फिर आए अच्छा पान खा लो भाई। रात–दिन मनुष्य इसी तरह Superficially रहता रहेगा तो गहराई उसके अन्दर उतरती नहीं है, और इसीलिए कुण्डलिनी जागृत होती नहीं है धर्म के मामले में भी नहीं, search के मामले में भी। परमात्मा को खोजने के मामले में भी। जैसे अमेरिका में गुरु Shoping होता है वैसे यहाँ भी गुरु Shoping होता है। नहीं मैं सिर्फ़ गया था, मैंने देखा, मैंने चरण छुए, दर्शन हुए, प्रसाद मांगा, दर्शन करने गया था माँ मैं तो वहाँ पर। वो दर्शन में उन्होंने आपके अन्दर में भूत रख दिए होंगे? मैं तो दर्शन के लिए गया था। पर ये कुण्डलिनी तो उठ नहीं रही बाबा, मैं क्या करूं? उनको क्या? ये तो बड़ी गहरी सूक्ष्म चीज़ है कुण्डलिनी का उठाना और कुण्डलिनी का ऊपर चढ़ना भी अति सूक्ष्म चीज़ है। गर आपने इसकी संभाल नहीं करी, गर आपने अपना विचार इतना सूक्ष्म नहीं रखा तो चीज़ तो दब गई न। अब भी पार होने के बाद भी आप देखिएगा कि आपके Vibrations खो जाएंगे, ये तो है ही बात आपको बता दें। लोग कहते हैं माताजी दीजिए, तो Permanent दीजिए, क्यों साहब आपने मुझे क्या Permanent दिया है? मैं आपको क्यों दूं Permanent? मैं तो नहीं देने वाली, मैं तो महामाया हूँ। सीधा हिसाब। आप Permanent पर बैठिए तो मैं भी Permanent दूंगी और आप ऐसे कि आये यहाँ, जैसे वो ये कि Nescafe फट से काफी बन गई, वैसे माँ आप कुण्डलिनी तो जागृत करती है, वो तो मैं करती हूँ। जेट कुण्डलिनी का Set जरूर करती हूँ पर खींचती भी वैसे ही हूँ। है ना सही बात? आप खो भी देते हैं अपनी Vibrations को इसके बारे में ज़ेन System में लिखा हुआ है उसको सपोरी कहते हैं कि आदमी जैसा कोई बॉल के जैसा होता है, ऊपर जाता है नीचे आता है, ऐसे ही डॉवा डोल चलता है। ये, वो होता है। इसलिए अपने चक्रों को संभालना पड़ता है। अपने को गहराई में उतरना पड़ता है, अपना जीवन गहरा बनाना पड़ता है, अब आप पूरा अपना जीवन जो है फालतू चीज़ों में बर्बाद करेंगे सुबह से शाम तक। अब करना ही पड़ता है, क्या करें, दुनिया ऐसी है, उसके लिए करना पड़ता है और आपके पास समय भी नहीं कि अपने में गहराई उतराएं और परमात्मा के साम्राज्य में बैठे रहें। तो ठीक है आप जिस चीज़ की चाहत करेंगे वही होगा, आप जो करना चाहेंगे वही होगा। अपना समय ऐसे ही बर्बाद आप कर लीजिए ऐसे ही आपने हजारों जिन्दिगयाँ काटीं, और एक कट जाएगी, लेकिन ये वाली ज़रा मुश्किल रहेगा मामला क्योंकि फिर पता होगा बड़ी गलती कर गए, सत्य को मना करते करते जो Real सत्य आ गया उसको भी मना कर गए। वो तो देखना तो चाहिए न, समझना तो चाहिए। उसको पाने के बाद जो आदमी खो देता है तब तो समझना चाहिए कि उनके लिए ये व्यर्थ ही हुआ।

दिल्ली शहर की ये History है, ये कहना चाहिए कि हर समय काफी लोग पार हो जाते हैं पर जमते नहीं। जमने वाले बहुत ही कम लोग होते हैं। हर कार्यक्रम के बाद एक दो आदमी बच जाते

हैं। इस प्रकार तीन चार साल से हम आ रहे हैं, कुल मिला करके गर आप देखिए तो जो रोज़ के आने वाले आदमी हैं, जो उतरे हैं, जो कुण्डलिनी को मास्टर कर चुके, ज्यादा से ज्यादा दस या बारह लोग हैं, बस। बड़ी दुख की बात है। इसलिए आपसे, आज आखिरी दिन है, माँ के नाते मैं विनती करती हूँ और शक्ति के नाते आगाह करती हूँ कि अपनी गहराई को पाइए। अपनी गहराइयों में उतरिए। अपने समय को इस महान शक्ति के लिए रखिए। इसमें आप पाइए और दूसरों को दीजिए। बहुत बड़ा कार्य करने का है। गर हम किसी से कहते हैं कि मुम्बई शहर में और सब शहरों में मिलाकर कोई बारह, दस हजार आदमी हैं, अरे क्या हुआ, दस हजार आदमी हैं तो क्या हुआ? सच बात है। बहुत लोगों को होने का समय आ गया है और ये है ही ऐसी चीज़ कि इतिहास की दृष्टि से ही वो समय आ गया था कि जहाँ बहुत लोग उसे पाएं। हालांकि बहुत से Realized Souls हैं जिन्होंने जन्म लिया है। बहुत से Realized बच्चे पैदा हुए हैं। दस साल के अन्दर वो तैयार हो जाएंगे। इसमें कोई शंका नहीं है। स्टाइलर जैसे आदमी ने इग्लैण्ड में लिखा है कि अब वो समय दूर नहीं कि बहुत से Realized Soul इस संसार में जन्म लेंगे। ये कलियुग का मामला है, कलियुग में दो ही तरह के आदमी जन्म ले सकते हैं। एक तो कीड़े मकोड़े मच्छर लेंगे जो कि हर हालत में ऐसी दुर्दशा में रह सकें और ऐसे गन्दे atmosphere में रह सकें। इसलिए Population भी बढ़ता है।

जितनी देश में गंदगी और दुर्दशा आती है उतना ही Population बढ़ता है। जैसे गरीबी आ गई, गरीबी तो leprosy है, समझ लीजिए, गरीबी से घबराना चाहिए। ये आदमी गर अपने गरीबी को लेकर आए कि साहब मैं गरीब हूँ, मुझे दीजिए, तो उसे दो झापड़ दीजिए। ग़र आदमी कोशिश करे तो उसको ऐसे लानत वानत जैसे करने ज़रूरत नहीं, बस कोशिश की बात है। इस तरह से हम सोचते हैं कि हम गरीबों के लिए क्या कर सकते हैं। बहुत कुछ कर सकते हैं। किसी आदमी को आप गरीब देखें तो उसकी आप मदद करे उसको ऊपर उठाने की कोशिश करें। हरेक गरीब आदमी को उठाने की कोशिश करें, आपका कर्तव्य होता है। जिस तरह से भी हो सकता है उसकी मदद करें, उसे बताएं किस तरह से वो अपना जीवन निर्वाह करे। बहुत ही ज्यादा पैसे की ज़रूरत नहीं। ज्यादा पैसा हो गया तो उसके पैर निकलेंगे। जो आदमी शराब पीने लग गया तो अब उसको कहना अब तेरे को पैसा ज्यादा करने की ज़रूरत नहीं। जिसने सिगरेट पी उससे भी कह सकते हैं कि बस काफी है, जिसने बीड़ी पी उससे कहना अब काफी है। अब तू गरीब नहीं। फिर जो जुआ खेलता है तो वो कभी भी गरीब नहीं। इतना हो कि बस उसका खाना पीना चले, उसमें कोई विषय–वासना नहीं आए। सो ऐसी जगह ही कीड़े मकोड़े पैदा होते हैं और इसीलिए Population बढ़ता है। जैसे ही वातावरण अच्छा हो जाता है, आप जानते हैं कि जहाँ बुरादा होता है जहाँ गंदगी होती है, वहीं मच्छर पनपते हैं। जैसे ही सफाई हो जाती है वहाँ एक ही दो फूल खिलते हैं। इसीलिए बहुत ज़रूरी है कि हम लोग इस वातावरण को शुद्ध करें और इस वातावरण को शुद्ध करने के लिए ज़रूरी है कि आप लोग इस शक्ति को वहन करें, पहली मर्तबा अब मानव अपने व्यक्तित्व से या अपनी शक्ति से ये जो पाँच तत्व हैं उसमें शक्ति डाल सकता है। इसके बहुत सारे Experiment किए हैं। हमारे Scientist लोगों ने बताया किस तरह से हम शक्ति दे सकते हैं इन पाँच तत्वों को। किस तरह से हम हमारी खेती बढ़ा सकते हैं। ये लोग Agriculturist हैं Agricultural University राहुरी में बड़े बड़े Scientist हैं, आप उनको चिट्ठी लिखकर पूछ सकते हैं, उन लोगों ने जब Vibrated पानी दिया तो 2/3, दो तिहाई फ़सल उनकी ज्यादा आई और फूल बड़े आए। और हमने जो वहाँ की चीज़े देखी तो बड़ा आश्चर्य लगा हमें कि कुछ फल ऐसे कि ऐसे तो फल हमने कभी देखे नहीं थे। उनके रंग, उनका तेज, उनका आकार प्रकार एक अजीब तरह की चीज़ थी। इन्हीं चैतन्य की लहरियों से आप लोगों की बीमारियाँ मुफ्त में ठीक कर सकते हैं। आधा प्रश्न तो आपका ठीक हो गया, Health Ministry बन्द करा सकते हैं। आप का पैसा बचा, डॉक्टरों के जेब आप कुछ कम भरेंगे, डॉक्टर लोग इसी से मुझसे घबराते हैं। इसी से बुलाया नहीं। लेकिन ऐसी सब बीमारियाँ थोड़ी सहजयोग से ठीक होने वाली हैं। लेकिन दुनिया बीमार रहे ऐसी कोई इच्छा डॉक्टर भी नहीं करता होगा। मुफ्त में, अब जो लोग हमारे सहजयोग में आते हैं अधिकतर लोग वो डॉक्टरों के पास नहीं जाते। दवाईयों के खर्चे कम हो गए, डॉक्टरों के खर्चे कम हो गए, नींद की गोलियाँ लेने की ज़रूरत नहीं, आप आराम से पड़कर सोइए। बहुत सारी बीमारियाँ ठीक हो जाती हैं, कुछ नहीं होती,

अधिकतर बीमारियाँ ठीक हो जाती हैं कुछ नहीं होती, अधिकतर बीमारियाँ ठीक हो जाती हैं। आपमें संतुलन आ जाता है, आप आनन्द में आ जाते हैं। शराब सिगरेट और जुआ बाज़ी, औरतों के चक्कर सब छूट जाते हैं। हमारे यहाँ कुछ हिप्पी लोग आए, थोड़े दिनों में देखा उनके पास बड़े अच्छे रेडियोग्राम, ये वो। मैंने कहा ये कहाँ से आए? कहने लगे अब तो हमारे यहाँ पैसे ही पैसे बरस रहे हैं। मैंने कहा 'कैसे'? कहने लगे अब हम गांजा नहीं पीते हैं, L.S.D. नहीं पीते, उसमें तो बहुत पैसा लगता है, अब हम शराब नहीं पीते। कहने लगे अब हम कहीं कैबरे में भी नहीं जाते, डाँस में नहीं जाते, बस इसी में मज़ा आता है। सब भारतीय रिकार्ड ले लेकर के बजाते रहते हैं। अब आप सोचिए। घर में उनके शोभा आ गई, रौनक आ गई, सब आनन्द से, सब लोग रह रहे हैं, मियां बीवी के झगड़े छूट गए, दूसरों की बीवियों के साथ भागते नहीं अपनी बीवी को प्यार करते हैं, और बीवी भी ठिकाने से आ गई। सब आराम हो गया, व्यवस्था हो गई, सब राम राज्य आ गया। उसमें खर्चे बड़े कम हो जाते हैं। एकदम खर्चे कम हो जाते हैं। मनुष्य मौके पर पहुँचता है। जो कुछ उसका जितना है Vibrations से देखता है। जो आदमी Vibrations में जीता है वो बहुत बड़ा संग्रह नहीं कर पाता। ज्यादा उसके पास चीज़ हो जाती है तो वह बाँटना शुरू कर देता है। संग्रह बहुत ज्यादा नहीं करता, उसको बाँटने का मज़ा आता है, उसको देने का मज़ा आता है। वो अपनी जो Virtues जो Goodness हैं उसको Enjoy करते हैं। वो अगर सच बोलता हैं तो उसका मज़ा उठाता है। आपने बहुत से लोग देखे होंगे जो कहते हैं ईमानदार लोगों का दुनिया में कोई ठिकाना नहीं। ये बेवकूफी की बात है। आप ईमानदार हैं यही तो मज़े की चीज़ है। सब बेइमान हैं और आप ईमानदार हैं, ये बड़ी शान की चीज़ है। ये आपका गौरव है, आपका ताज है। उसके लिए आप कहते हैं कि ईमानदार की कोई दुनियां में पूछ नहीं। पूंछ काहे को लगाने को चाहिए? इसकी क्या ज़रूरत है? अरे आप ईमानदार आदमी हैं दुनिया में लोग कहते हैं कि शास्त्री जी इतने ईमानदार थे कि जब मरे थे तो वे कर्ज़े अपने छोड़ गए। अब वो कर्ज़े छोड़ गए यही उनका गुण हो गया। देखिए सारी दुनिया इन्हीं का उनको गुण दे रही है कि उन्होंने debts छोड़ दिए। अपने गुणों पर आदमी को आनन्द आता है, अपने गुण से वो प्लावित होता है। एक सती स्त्री है वो अपने सतीत्व और अपने पतिव्रत्य के आनन्द में रहती है। अपने गुणों का आनन्द आता है अपने मज़े का आनन्द आता है। आप कोई शराबी को देखते हैं कि वो शराब पी रहा है तो आपको उस पर दया लगती है कि भई मैं तो आराम से बैठा हूँ, ये कहाँ मरा जा रहा हैं? फिर ये नहीं लगता कि ये शराब पी रहा है और मैं तो बिल्कुल ही पुराने ढंग का हूँ। मैं तो बिल्कुल पी नहीं पाता। हीन भावना की जगह आदमी को ये लगने लगता हैं कि ये आदमी पता नहीं कहाँ ये दयनीय दशा में आ गया? उल्टी ही दशा आ जाती है। हँसी आने लगती है और बेवकूफी पर उसको आश्चर्य लगता है। जब ऐसी कोई बातें करता है तो उसको लगता है कि ये कैसा बेवकूफ आदमी है? कैसी बात कर रहा है? अभी भी लोग मुझसे कहते हैं कि माताजी यहाँ तो ऐसा है कि अगर आप शराब नहीं पिओ तो आपकी कोई इज्जत नहीं करता। मैंने कहा सच्ची

बात है? ऐसा तो कभी हो ही नहीं सकता। वास्तविक में ऐसा नहीं हो सकता। असल में वो आपसे इसलिए भिड़ते हैं कि उनको लगता है कि मेरी दुम कटी है और इसकी क्यों नहीं कटी? इसीलिए आपके पीछे पड़ते हैं। लेकिन ग़र आप ये उनको ज्यादा न जताएं कि हम शराब नहीं पीते हैं पर उल्टी तरह से बातें करें। इसमें कृष्ण की Diplomacy करनी चाहिए कि ऐसे कहें मैं आजकल इतना खुशहाल हूँ बड़ा मजा आता है मुझे। घर में आराम से खाता पीता हूँ, मुझे आजकल कोई तकलीफ नहीं। उन्होंने कहा क्यों भई? मैंने कहा शराब छोड़ दी न तो वो पैसा सब बच गया। फिर इतना मज़ा आता है, बच्चों को लेकर मैं घूमता हूँ। बड़ी मेरी मज़े की जिन्दगी है। वो फिर सोचेगा कि अरे ये तरीके होते हैं। उससे आप दुनिया बदल सकते हैं। इस तरह से संसार में राम–राज्य आ जाएगा। सतयुग तो शुरु हो ही गया है, इसमें शंका ही नहीं है क्योंकि सतयुग के ही असर आ रहे हैं। कोई भी बात छिपने वाली नहीं। कार्टर साहब ने एक छोटी सी बात कह दी, वो भी बाहर आ गई। कोई किसी की बात छिपने नहीं वाली, सब लोग सामने आ जाएंगे सबका पता हो जाएगा, कौन कहाँ है क्या है। कौन कितनी गहराई में है सब प्रकाशित हो जाएगा। अब वो दिन नहीं रहे कि आप कोई भी चीज़ छिपा कर कर लें। एक आदमी दूसरे को खींचेगा, एक ईमानदार आदमी होगा उसको लोग खींचना चाहेंगे तो वो खिंच नहीं पाएगा क्योंकि उसको समाज, जनता उसकी मदद करेगी। ये सतयुग के लक्षण हैं और ये शुरु हो गए हैं। कोई भी आदमी बहुत ग़र दुष्ट हो वो भी चल नहीं पाएगा। सबका जिसे कहना चाहिए कि Cosmic Change आ जाएगा और आ ही रहा है। उसको आप लोगों को देखना चाहिए और सोचना चाहिए कि माँ ये कहती थीं, सच था। और आप अपनी स्थिति बनाएं इसी चीज़ में और आप ही वहन करें इस शक्ति को और सारे संसार को भी दें। उसके लिए आपको रुपया पैसा खर्च करना नहीं, आपको कुछ भी देने का नहीं, सिर्फ ये कि आप अपना Instrument ठीक कर लें। इस Instrument के लिए आपको ध्यान धारणा आदि करना पड़ता है। इसके लिए जो भी ये लोग Programme करते हैं दिल्ली में, जो भी इनके पास सहूलियतें हैं, इनका नम्बर आप फिर से लिख लें, E-288 पंडारा रोड, आप वहाँ पर खबर लें E-288 पंडारा रोड, यहाँ उनसे बातचीत करें। Every Friday 6 to 7 वहाँ आप जब भी फोन करें वे बताएंगे इस बारे में। आज बहुत दिनों बाद एक किताब भी प्रकाशित हो गई है वो भी आप ले लें। उसमें भी आप समझ लें कि कुण्डलिनी क्या चीज़ हैं और उसमें क्या क्या घटित होता है और किस तरह से ये कार्यान्वित होती है। इसमें कौन सी कौन सी विशेषता है। ग़र आप इस चीज़ को बिठा लें अपने अन्दर समालें, इसमें रजें, तब मज़ा आएगा। रे रजने वाली चीज़ है। अब वो समय आ गया है। परमात्मा का साक्षात्, सत्य का साक्षात्, जो कुछ लिख गए हैं उसका fullfilment, उसका Completion, उसकी पहचान, पूरी तरह से आप चैतन्य लहरियों से कर सकते हैं क्योंकि आपके अन्दर एक नई चेतना जिसको वाइब्रेटरी चेतना कहते हैं, चैतन्यमय चेतना आ गई है, माने जो भी awareness है उसमें light आ गई है। उसके माध्यम से आप सिद्ध कर सकते हैं कि परमात्मा है

या नहीं, परमात्मा की शक्ति क्या है, किस तरह से चलती है, ये हमारे अन्दर चक्र हैं या नहीं, चक्रों में देवी देवता हैं या नहीं। हम लोगों का किस तरह से उत्थान होता है? किस तरह से हम दूसरों को ठीक कर सकते हैं, किसमें क्या बीमारी है, अनेक छोटी छोटी चीज़ों का आप निर्णय कर सकते हैं। जैसे कि एक साहब आये, कहने लगे माँ हम बाजार गए तो समझ नहीं पाये कि ये चीज़ खरीदें या नहीं खरीदें। मैंने कहा आप वाइब्रेशन देख लेते। एक बार हम जा रहे थे तो किसी ने कहा कि एकदम हमें वाइब्रेशन आए तो हमने सोचा कि माँ कहीं आयी होंगी और पहुँच गए वहीं पे। कहने लगे देखो माँ हमको तो वाइब्रेशन आये, हम पहुँच गए यहाँ। स्टेशन पर एक दिन ये परेशान थे कि अभी तक पहुँची नहीं माँ, तो उनके एक दम वाइब्रेशन आए कि माँ तो पहुँच गईं। हम भी वही पहुँच गए। तो वाइब्रेशन जो हैं वो आपस में बोलते रहते हैं बताते रहते हैं, बराबर ठीक ठाक करते रहते हैं। इतने कमालात हैं, इतने कमालात हैं कि हम आपको बता नहीं सकते। उदाहरण के लिए साहब यहाँ दिल्ली में आए हमने आपसे बताया, यहाँ आए और उन्होंने कहा कि हम तो जानते नहीं कि दिल्ली में जाऐं कहाँ। तो उसने कहा कि माँ को याद किया, इतने में सामने देखते ह कि एक साहब चले आ रहे हैं! तो उन्होंने कहा आप कौन हैं? तो कहने लगे मैं तो माँ का भक्त हूँ मैं भी माँ का भक्त हूँ। उन्होंने उनके Vibration देखे, कहने लगे हम तो आपको जानते हैं। आपको माताजी निर्मला देवी ने जागृति दी है? कहने लगे हाँ। आपने कैसे पहचाना? कहने लगे Vibration आ रहे हैं, आपके भी आ रहे हैं। चलो। दोनों की दोस्ती हो गई। ये पहचान हो गई कि हम एक ही माँ के बेटे हैं। चाहे आप अमरीका चले जाओ। एक साहब अमरीका गए उनका भी ऐसा ही हाल हुआ। उन्होंने कहा I was lost, वहाँ एक साहब मुझे मिले तो उन्होंने कहा कि साहब आपके Vibration आ रहे हैं। मुझे भी Vibration आ रहे हैं। कहने लगे आप माताजी के भक्त हैं? कहने लगे हाँ। तो कहने लगे चलो भई, अपने चलें एक साथ। इसी तरह से अनेक काम बनते जाते हैं। जहाँ जाइए वहाँ Vibration से पता चलता है, ये सुगन्ध है न। हरेक आदमी पहचान लेता है। कुत्ते बिल्लियाँ तक आपको पहचान लेंगे कि आप Vibration वाले आदमी हैं। छोटे छोटे बच्चे भी पहचान लेते हैं। बताते हैं कि स्कूल में हमारे यहाँ पाँच लड़के हैं, वो हैं पार। बाकी नहीं हैं। कौन पार है, कौन नहीं, फौरन पता चल जाता है। जो पार है वो हमारा भाई हुआ या बहन हुई, क्योंकि माँ के ही तो सब बच्चे हैं। ये नई चीज़ अन्दर में आ जाती है। और आप सोचो आपके कितने भाई बहन इंग्लैण्ड अमरीका में हैं। उस तरह के नहीं जैसे गुरुजी लोगों के होते हैं, उस तरह के नहीं, ये असली हैं। ये आपके लिए दौड़ेंगे। आपके लिए सब काम करेंगे। एक साहब राहुरी से जा रहे थे, अपने बोरे ले जा रहे थे, चीनी के बोरे ले जा रहे थे, ऊपर से बरसात हो गई। उनके सब बोरे भीग गए। उन्होंने कहा कहीं रोकेंगे तब होगा, नहीं तो हमारी तो सारी चीज़ बेकार हो गई। इतने में जाकर कहने लगे कि अच्छा चलो कहाँ जाएं? जहाँ रुक जाए वहीं रोको। जहाँ रोका वहीं पर Vibrations आने लगे। उन्होंने कहा यहाँ कहाँ Vibration? तो देखा। वहाँ रास्ते पर हमारा Board लगा है। कहने लगे यहाँ कहाँ हमारा

Board लगा है? अन्दर गए तो बंगले के अन्दर में वहाँ पर हमारा Centre! उन्होंने कहा आओ भई, तो उन्होंने कहा हम तो देखते देखते आए, भुलिया में बैठी हुई हैं। जहाँ हम गए उन्होंने हमसे बताया है। फिर उन्होंने हम से पूछा हाँ वो आए थे हमारे पास। एक साहब बैठे हुए थे, सवेरे उठकर देखा तो बोरे–बोरे सब सुखे हुए थे। फिर वो उठ गए, जितना पैसा था उतना मिल गया। लक्ष्मी जी की कृपा तो बडी होती है। इसमें कोई शंका नहीं। असली होती है। असली लक्ष्मी जी की कृपा होती है। एक हमारे पास एक साहब आते थे, बहुत दूर से, काल्वा से बड़े शरीफ आदमी, परन्तु गरीब थे खेती का काम करने वाले आदमी। मैंने उनसे कहा हर बार एक–एक हार लेकर आते हो? कितना खर्चा पड़ता होगा? क्यों इतनी परेशानी करते हो, हर बार नहीं करना चाहिए? कहने लगे माँ तुम्हारी कृपा से लक्ष्मी जी की कृपा हो गई। कहने लगे हमारा एक खेत था वैसे ही पड़ा रहता था। उसको हम जोतते नहीं थे क्योंकि उसमे मिट्टी ज़रा चिकनी ज्यादा थी। कोई सिंधी आए, कहने लगे तुम्हारी मिट्टी बड़ी अच्छी है हमको दोगे? कहने लगे, किसलिए? कहने लगे ईंट बनाने के लिए। तो उसको दस गुना दाम उसी मिट्टी का मिलता था, खेत का खेत उसी तरह बना रहा। अब उसकी मिट्टी उठाकर ले जाने का दस गुना दाम मिला। कहने लगे आपकी कृपा से हुआ, सहजयोग के बाद हुआ, कहने लगे हम कभी सोच भी नहीं सकते थे। ऐसे अनेक लोगों को फायदे हुए हैं। तो आपके Promotions भी हो जाते हैं, सरकारी नौकरों को बहलाने के लिए कह रही हूँ। पहली चीज़ Promotion होना चाहिए, Promotion हो जाएगा, आप अजातशत्रु हो जाते हैं। आपके शत्रु जो हैं आपके हट जाते हैं। Private वालों का भी फायदा हो जाता है, लेकिन सब से बड़ी चीज़ है कि अपनी नाभि साफ रखनी पडती है। आपकी नाभि खराब है और आप चाहें कि लक्ष्मी जी जागृत नहीं हुई और नाभि साफ करने के लिए शुद्धता रखनी पडती है उसके बारे में सोचना पड़ता हैं। एक साहब थे हमारे यहाँ आए, कहने लगे हमारे यहाँ कोई आता ही नहीं, हमारी दुकान ही नहीं चलती है। पूने की बात है। तो हमने कहा हम आएंगे, हम उनकी दुकान पर गए उनको जागृति दी, तो दुकान ऐसे चलने लगी कि अब बहुत ही Busy हो गए, अब वो बहुत बड़े आदमी हो गए, अब वो हमें मिलने भी नहीं आते। हर बार याद करते हैं। अरे फिर इतना Time नहीं मिलता, ये Business है वो Business है। हम दो बार पूना गए मिलने भी नहीं आए। और जब पहली मर्तबा हम वहाँ गए थे तो वो गरीब थे बेचारे, गरीब माने उनका चलता नहीं था। हमें याद है हम रिक्शा में बैठकर गए, मोटर थी नहीं, रिक्शा में बैठकर गए, तो पूरी समय रोते गए माँ आप चली जाओगी, हमारा कैसा होगा? अब ये हाल है अब हम वहाँ गए तो मिलने भी नहीं आए। तो ऐसे पैसे से भी क्या फायदा? मतलब क्या है कि समझ में आ जाता है, wisdom आ जाता है, संतुलन आ जाता है, क्योंकि आप समझते हैं Vibrations में, आप चाहते हैं ये चीज़ लें, फिर समझते हैं कि Vibrations ठीक नहीं हैं, छोड़ो। छूटते जाता है, आदमी साक्षी स्वरूप हो जाता है। देखता है नाटक सब। आज कितने लोग पार हुए, देखते हैं, हाथ ऐसे करें।